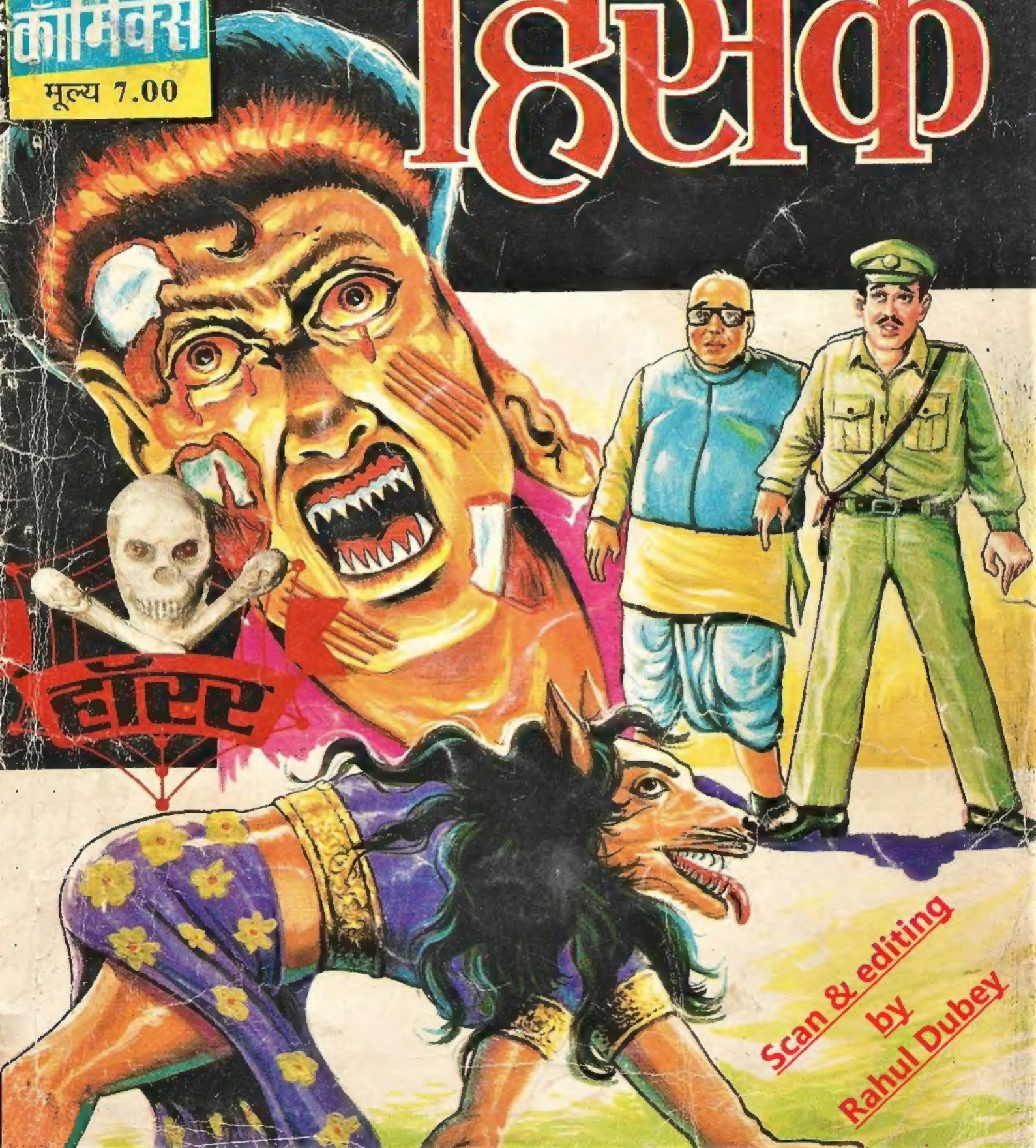


**पञ्चन**  
**कॉमिक्स**  
मूल्य 7.00

# हिंसक



*Scan & editing  
by  
Rahul Dubey*



# पवन कॉमिक्स

नये सैट के नये मनोरंजक कॉमिक्स



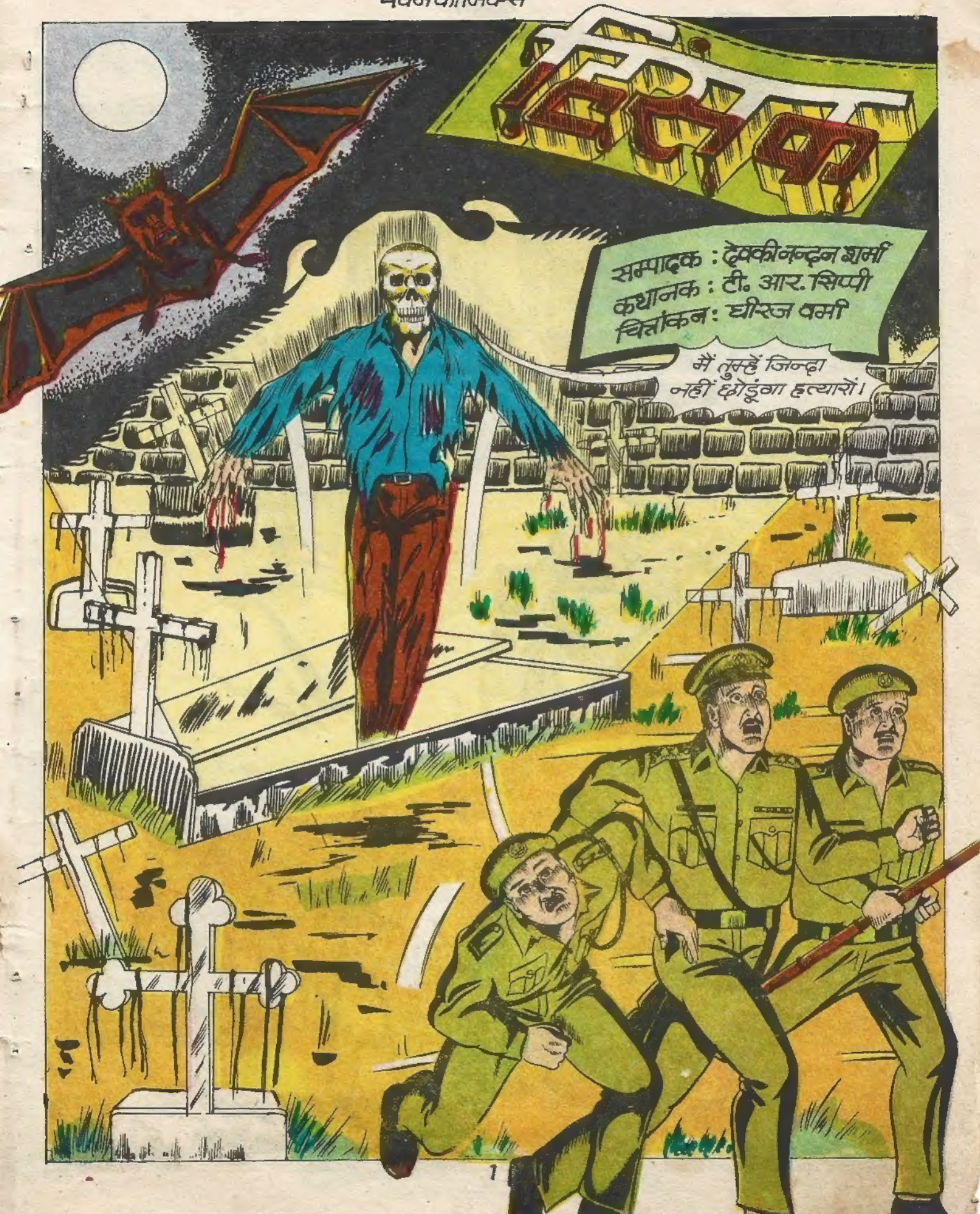
- |                          |                             |                |       |
|--------------------------|-----------------------------|----------------|-------|
| <input type="checkbox"/> | विक्रान्त और भूकम्पिया      | (डायजेस्ट)     | 16.00 |
| <input type="checkbox"/> | सूर्यपुत्र और खजूरा का ज़हर |                | 7.00  |
| <input type="checkbox"/> | हिंसक                       | (हॉरर)         | 7.00  |
| <input type="checkbox"/> | जुर्म का दुश्मन             | (रहस्य-रोमांच) | 7.00  |
| <input type="checkbox"/> | कानून का पंजा               | (रहस्य-रोमांच) | 7.00  |
| <input type="checkbox"/> | माला का अपमान               |                | 7.00  |

सम्पादक : देवकी नन्दन शर्मा

© समस्त कापी राइट प्रकाशक

प्रकाशक : पवन पॉकेट बुक्स, दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006







# हिंसक

रात के ब्यारह

बजे राजनगर पुलिस स्टेशन में-

यस... यस... ठीक है सर,  
आपका काम हो जाएगा।



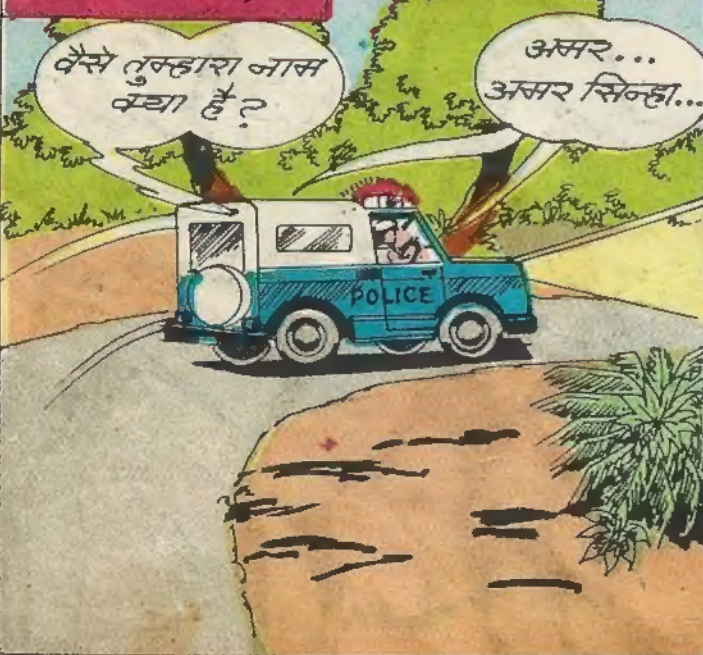
हां, तुम क्या कह रहे थे  
कब्रिस्तान वाले रोड पर  
कोई कार किसी को  
टक्कर मार गई?



हां, ई० साहब  
और एक सभ्य  
नागरिक होने के  
नाते मैं आपको  
सूचना देने आ  
पहुंचा।



ई० तुरन्त ही हवलदारों के साथ घटना स्थल  
की ओर चल पड़ा-



वैसे तुम्हारा नाम  
क्या है?

असरर...  
असरर सिन्हा...

घटना स्थल...

वह  
रही  
लाश  
साहब!



अब जरा वह  
भी बताने  
का कष्ट  
कर दो  
कि तुमने  
इसकी  
हत्या  
क्यों की!



असर पर जैसे अचानक बिजली टूट पड़ी -

क्या कह रहे हैं साहब... मैं तो एक सभ्य नागरिक ...



साबसे खुद खुन करता और हमसे जुबान लड़ाता है...!

आह!



अचानक चीरवा असर...

नहीं... यह खुन मैंने नहीं किया...



मैं जानता हूँ... पर चूंकि तुने यह एक्सीडेंट होते देखा है इसलिए तुम्हें भी मौत को बाले भगवाना पड़ेगा!

र... रियास्वर!

हां, हवलदार पान्डे, राजसिंह पकड़ लो इसे।



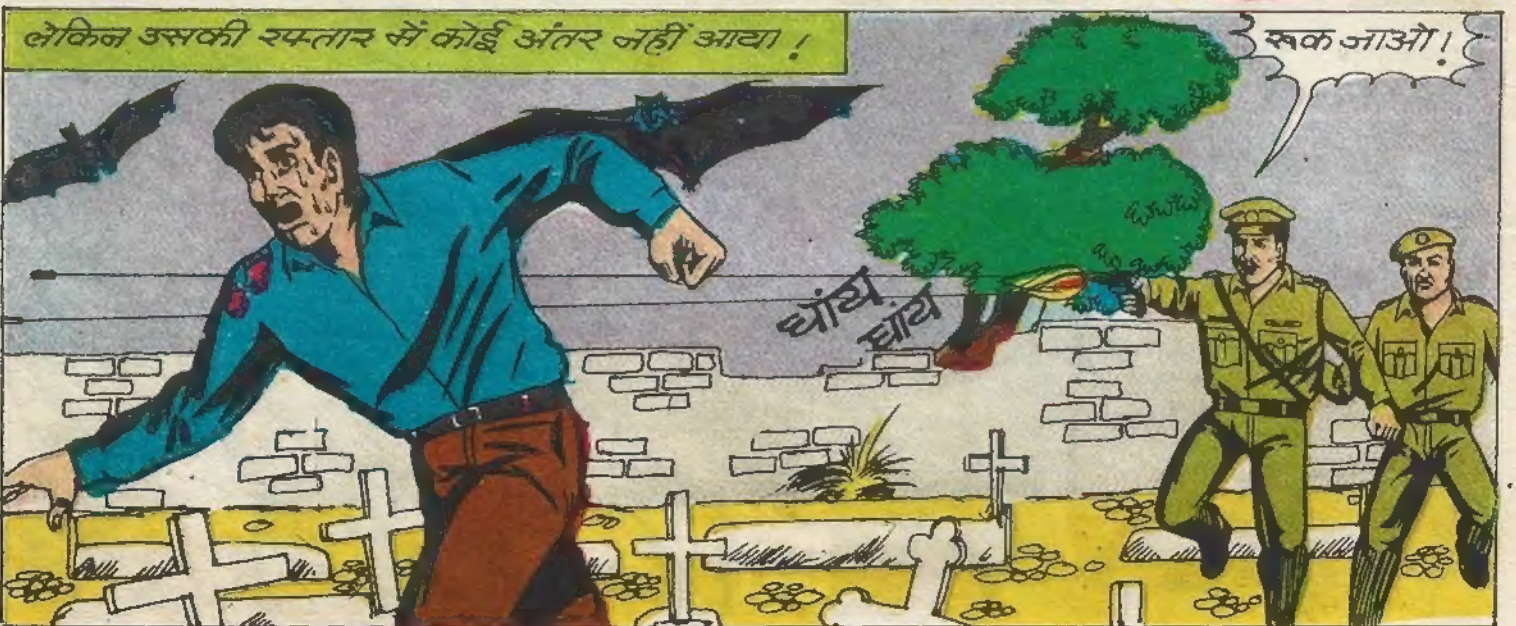
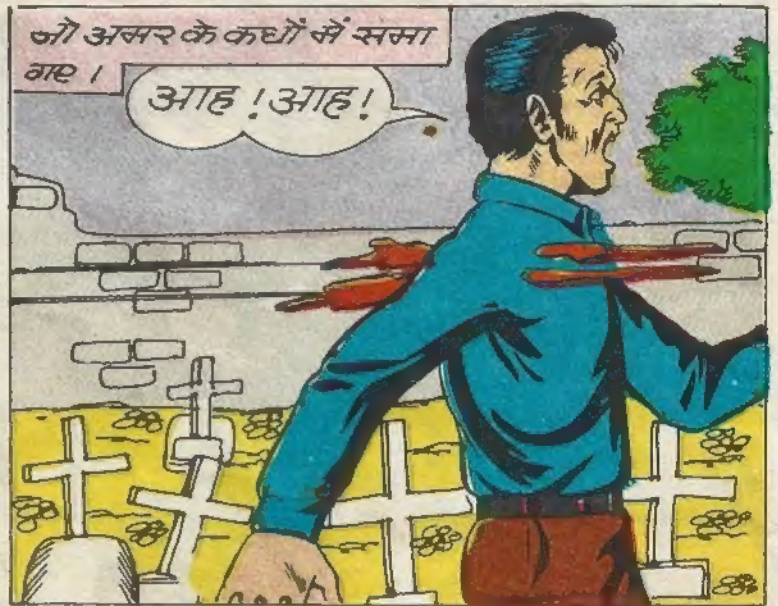
तभी नजाने कहा से असर में इतनी फुटी आ गई!

आह!

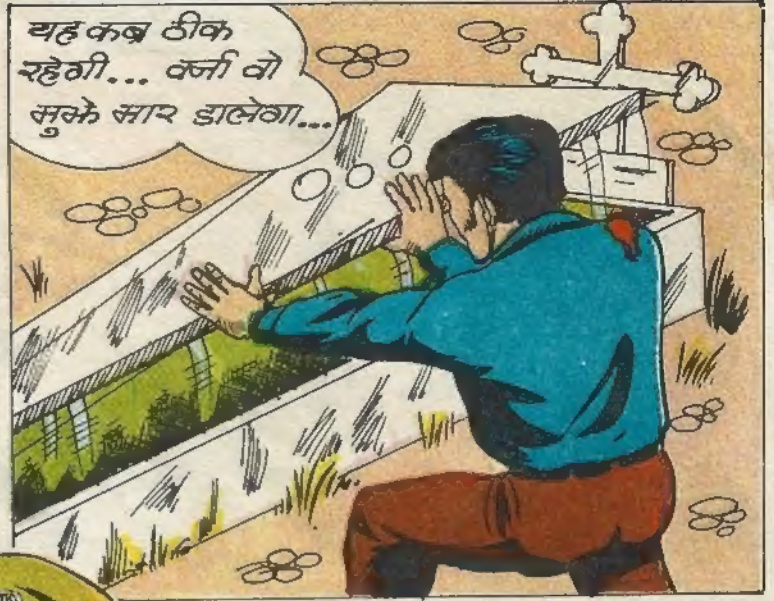
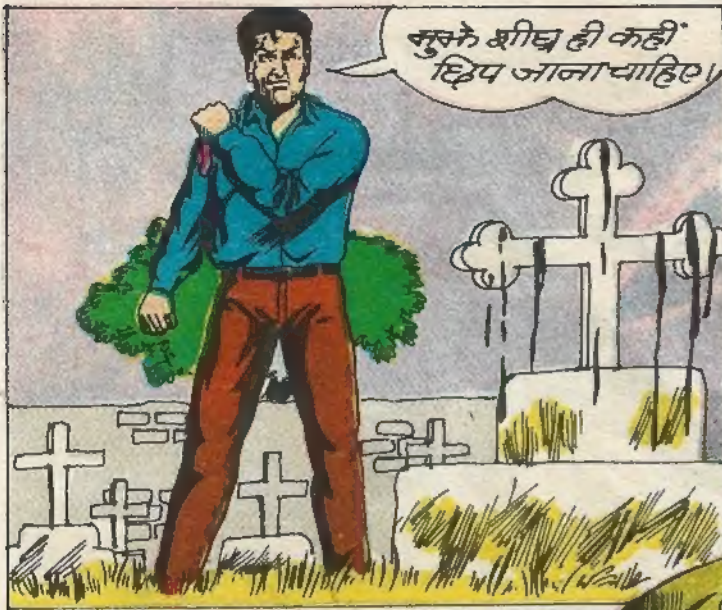
आह!





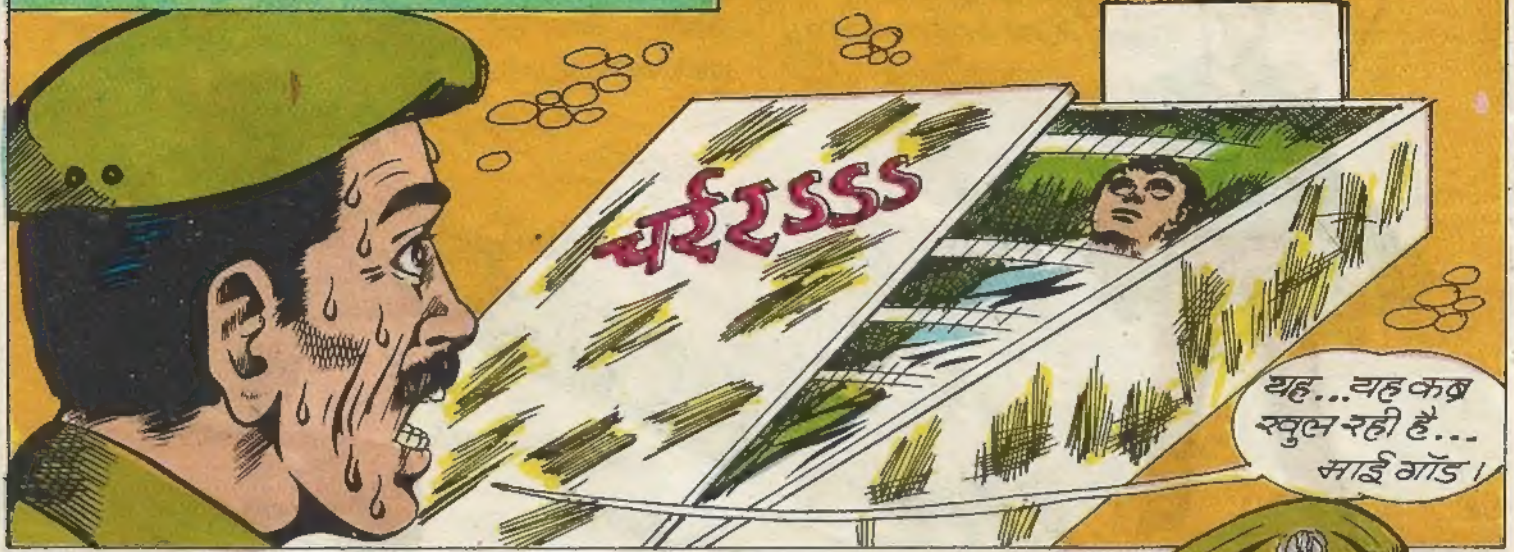








तभी पान्हे के हलक से चीख निकली-



फिर कब से से जो निकला वह... खुल जमा देने के लिए काफी था!







मैं तुम्हें  
जिन्दा नहीं  
धुँडुगा  
हत्यारों!



ध्याँ  
ध्याँ  
ध्याँ



अब मुझ पर तुम्हारी गोली का  
कोई असर नहीं  
होगा अब  
इंसपेक्टर!

रिवॉल्वर  
पिछल  
गई!



ई० अजीत ने कातका देकर हाथ  
धुड़ाया!

और गोली की रफ्तार से भाग लिया...

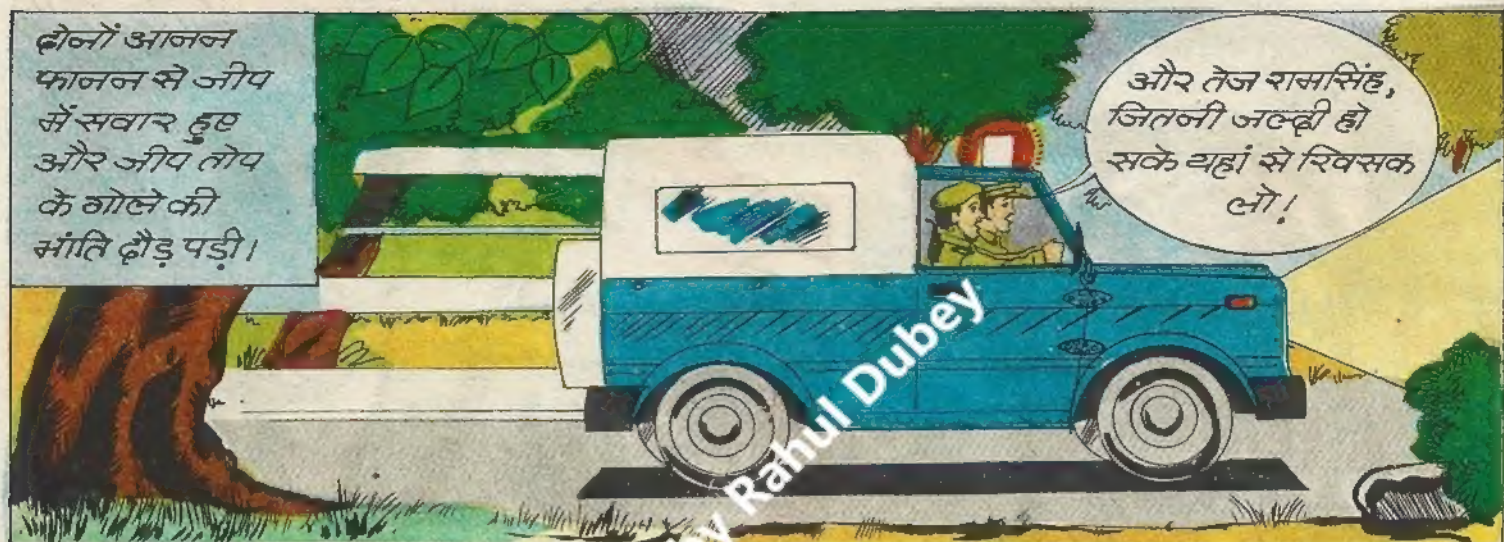


भाबो रामसिंह  
वह भूत बन  
गया है।

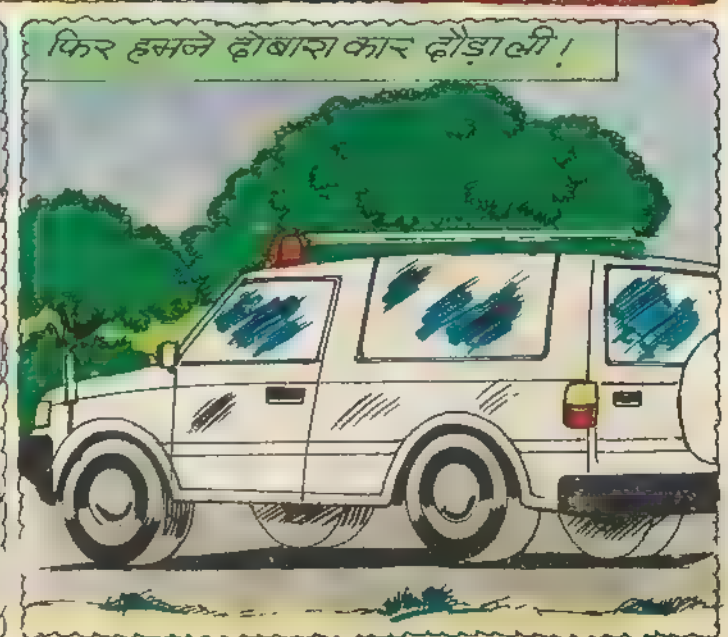
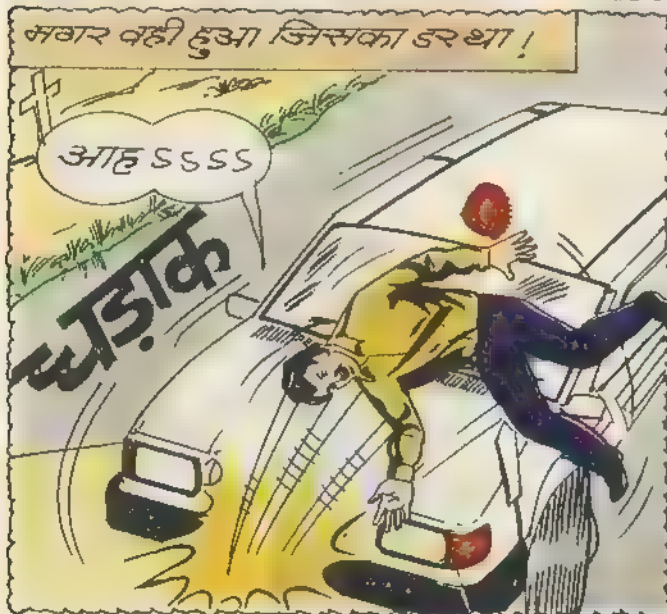
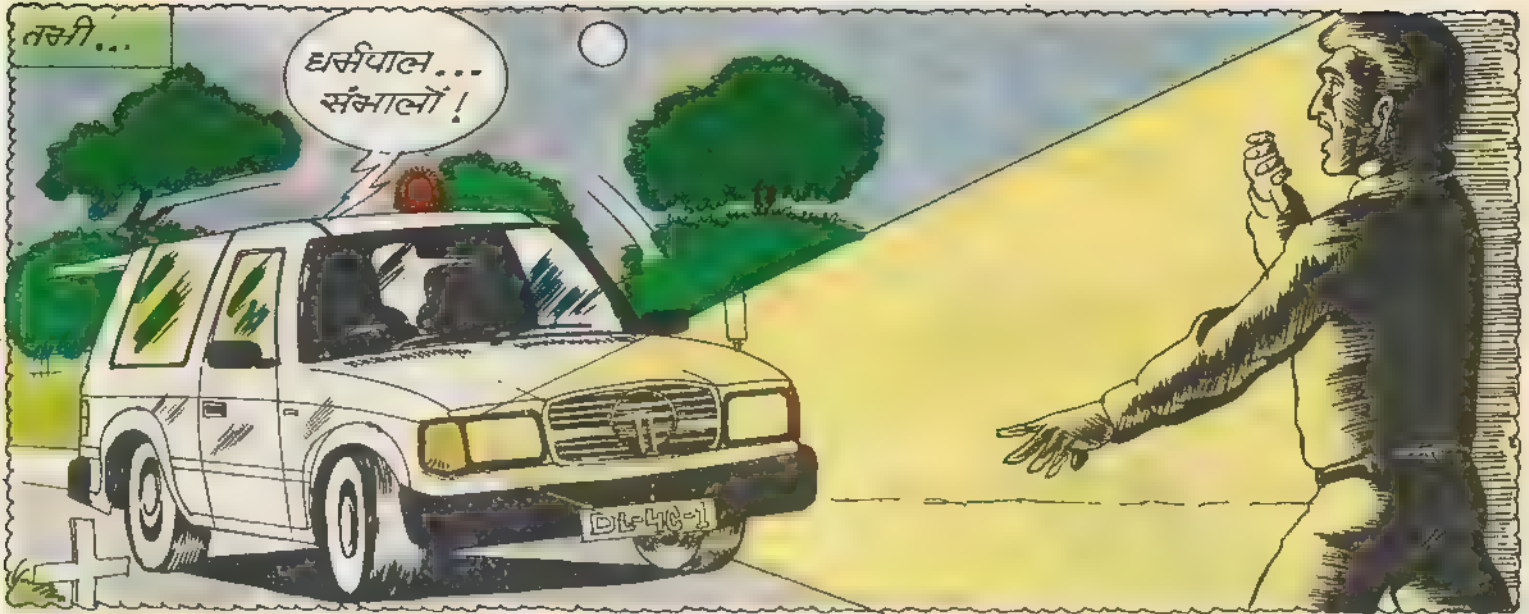
बाप रे भूत, मेरी  
तो नास सुन कर ही  
पैल हीली हो रही  
हैं!



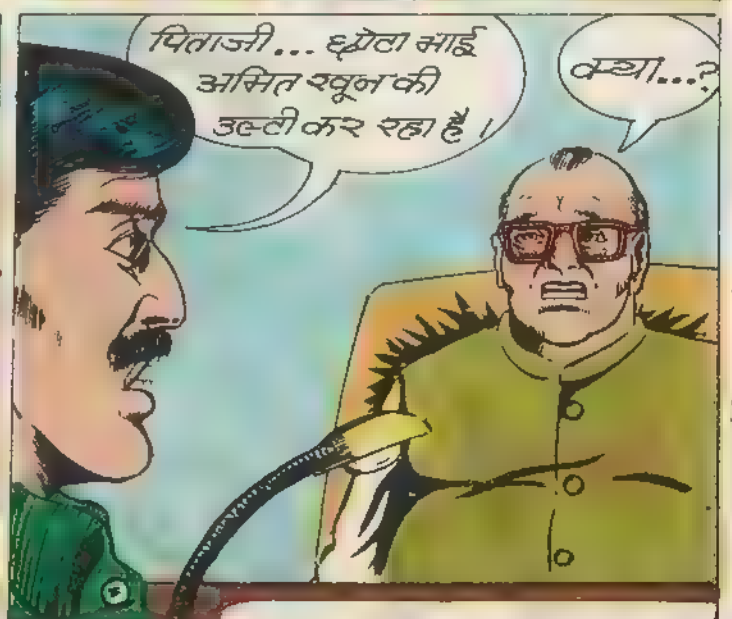
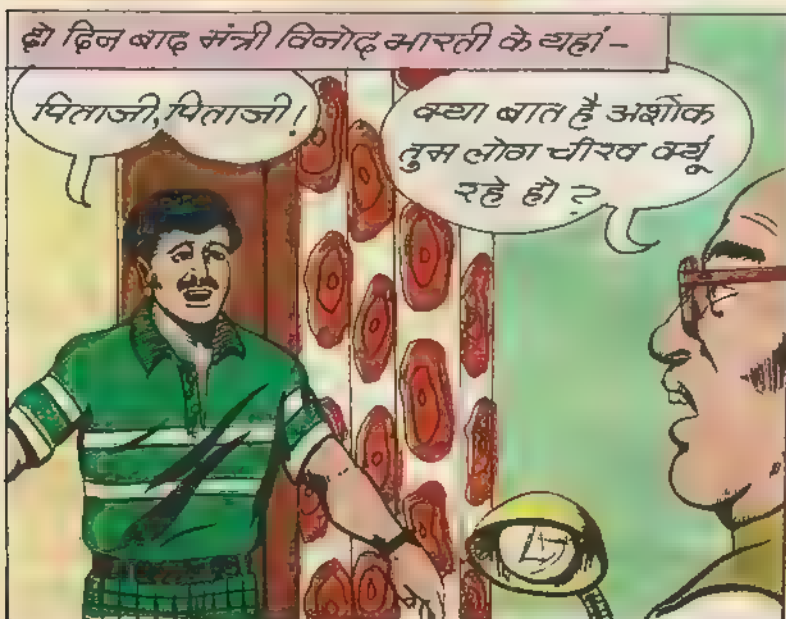
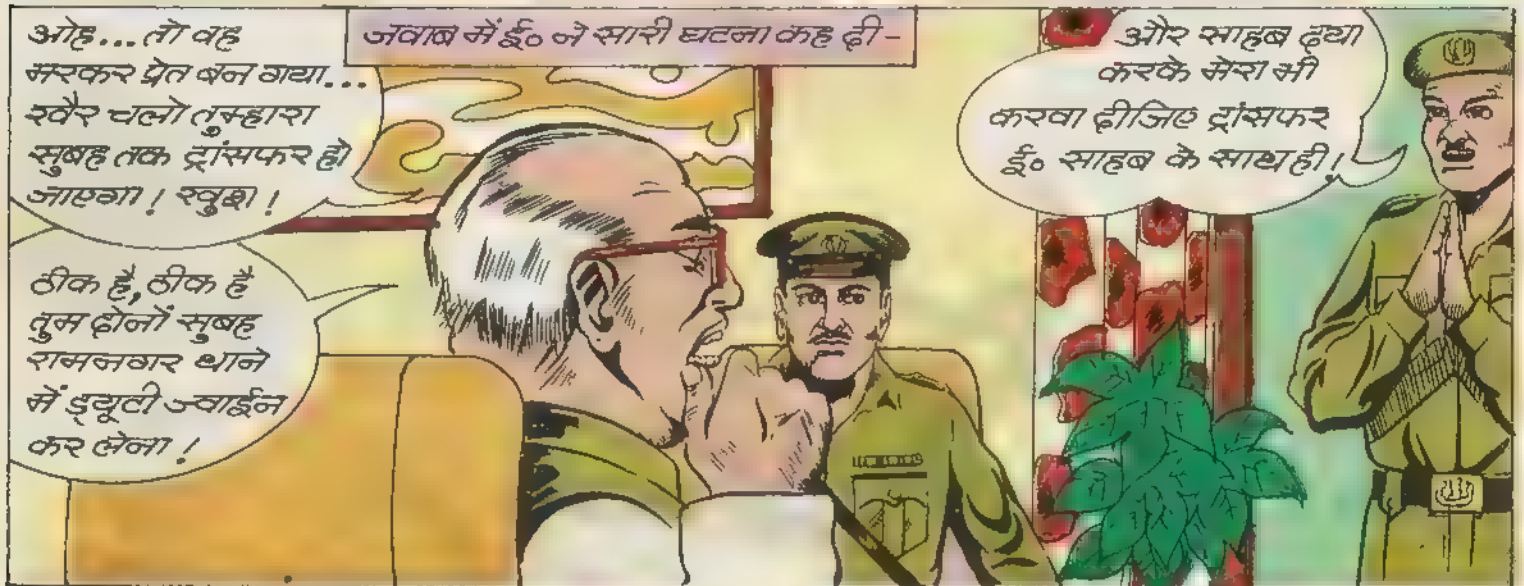














गोले की भांति विनोद भारती कमरे में दूखे-

असित की मां तुम क्या कर रही हो अभी तक डाक्टर को फोन किया?

डाक्टर माधुर आते ही होंगे मैंने फोन कर दिया था।

पिच

हुलक!

बेटा घबराओ मत... अभी डाक्टर साहब आते होंगे।

पिताजी रात मैंने सपना देखा... बड़ा भयंकर...

क्या... कैसा सपना बेटा।

मैंने देखा...

"मैं कब्रिस्तान में खड़ा हूँ... और सैकड़ों प्रेत मेरे आस पास खंडरा रहे हैं"

हाहा हा।

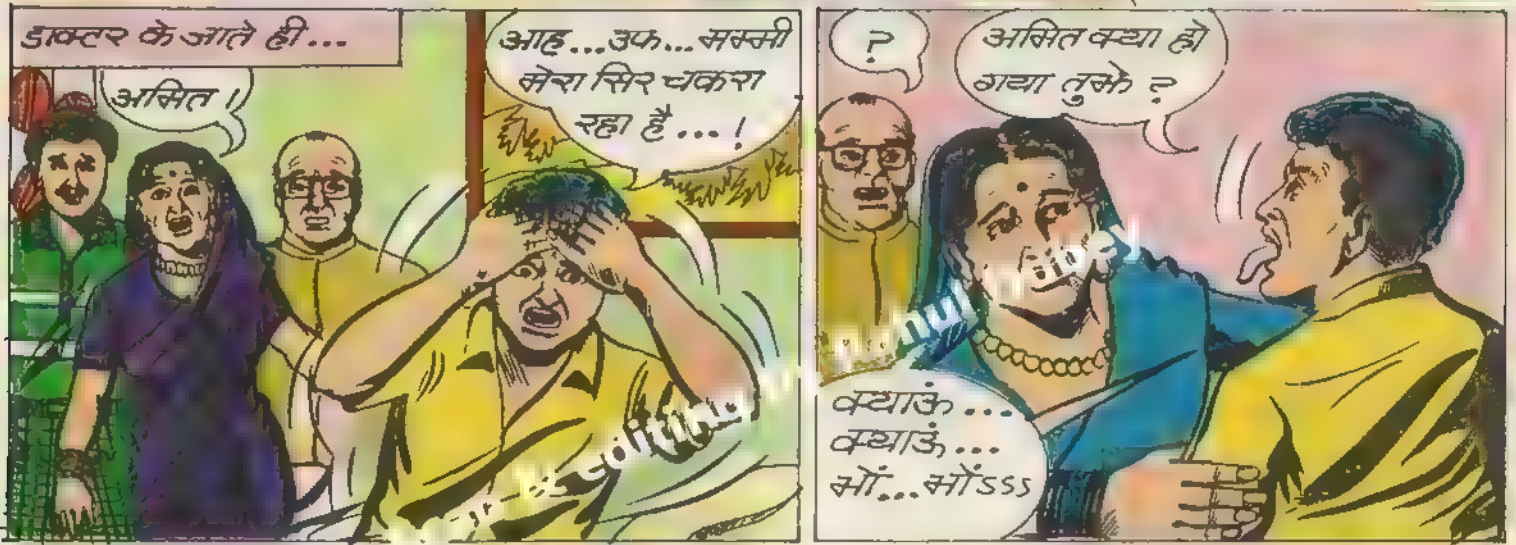
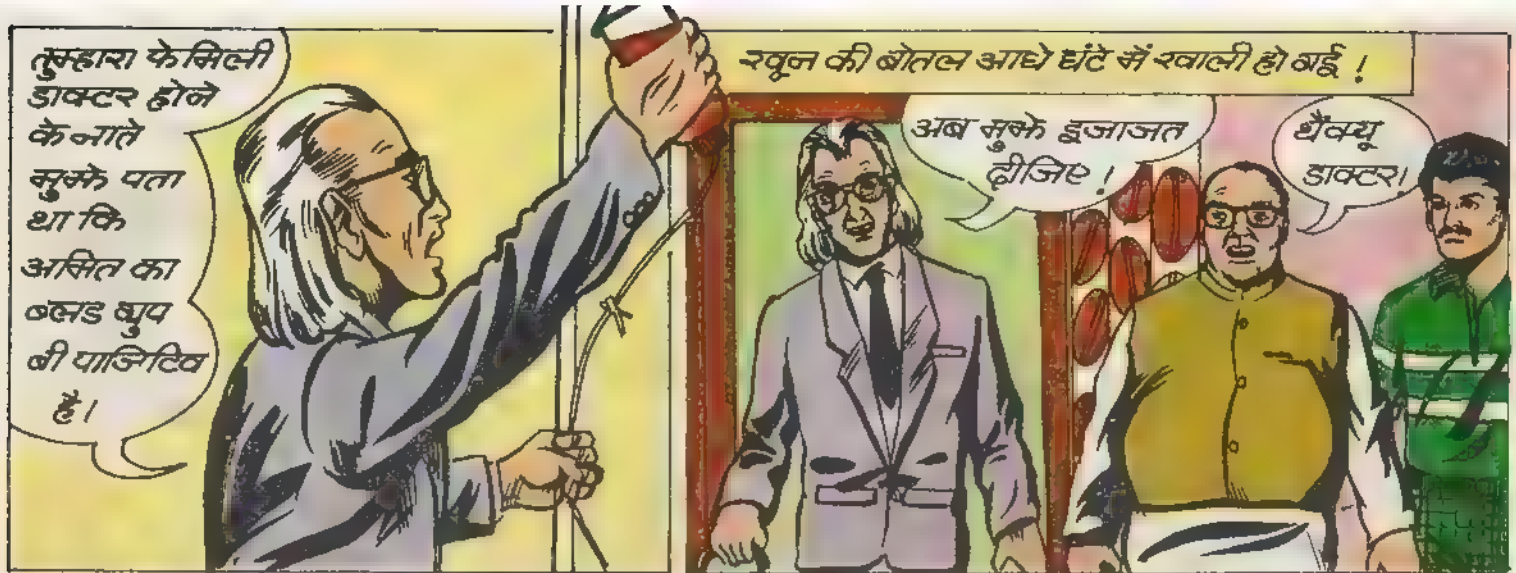
?

ही...ही... ही...

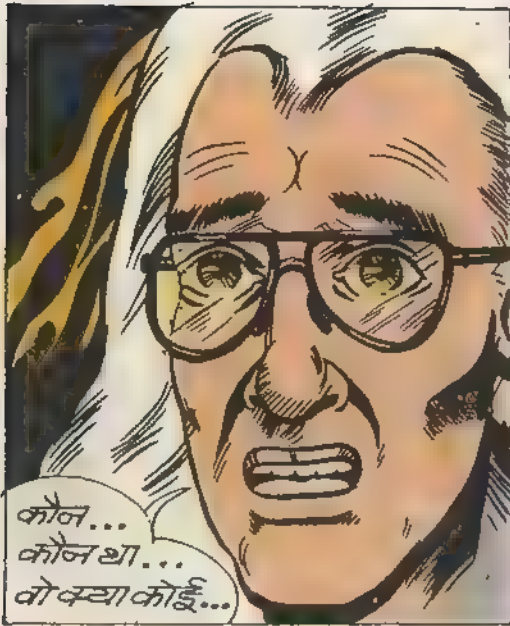




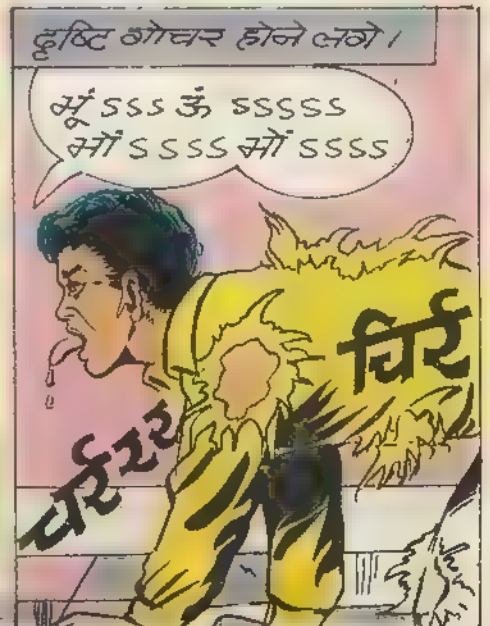
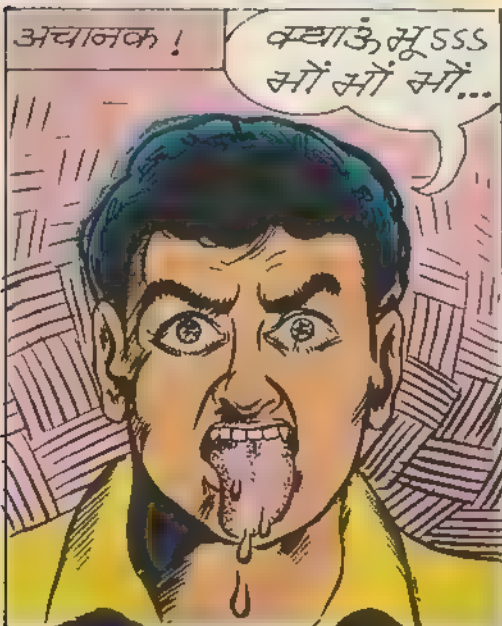
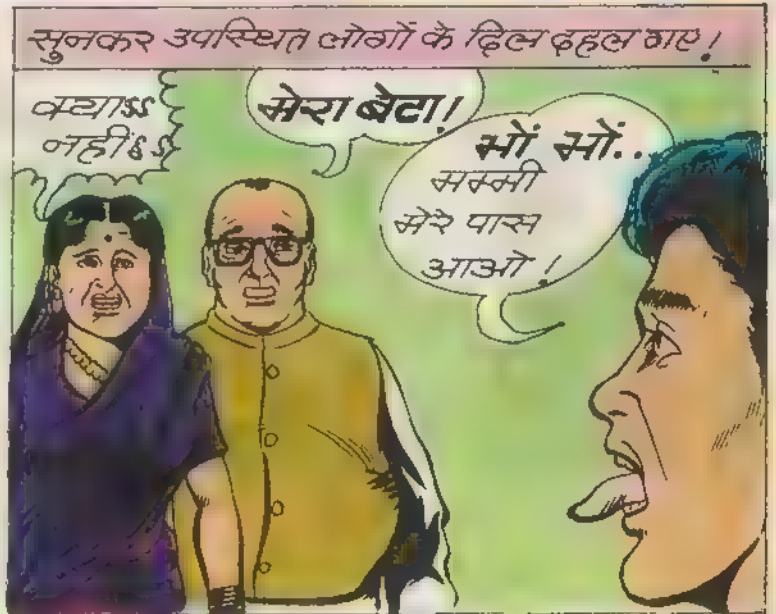
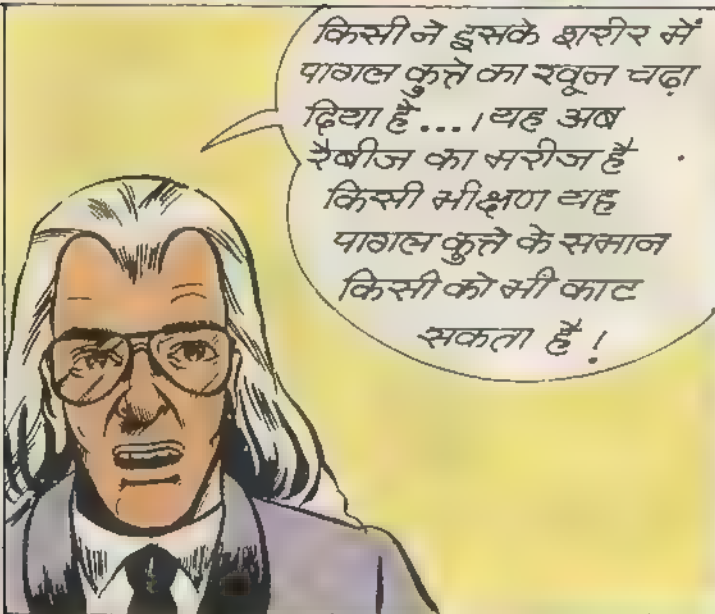
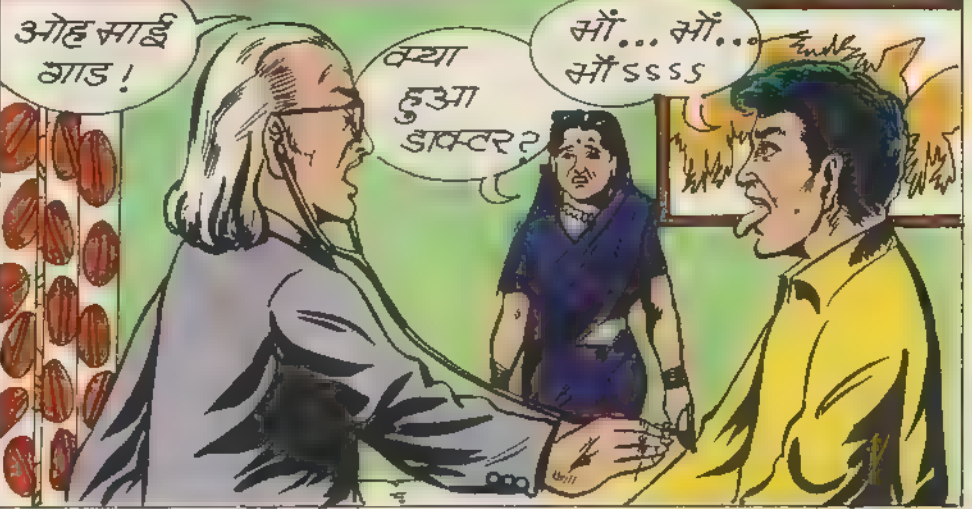




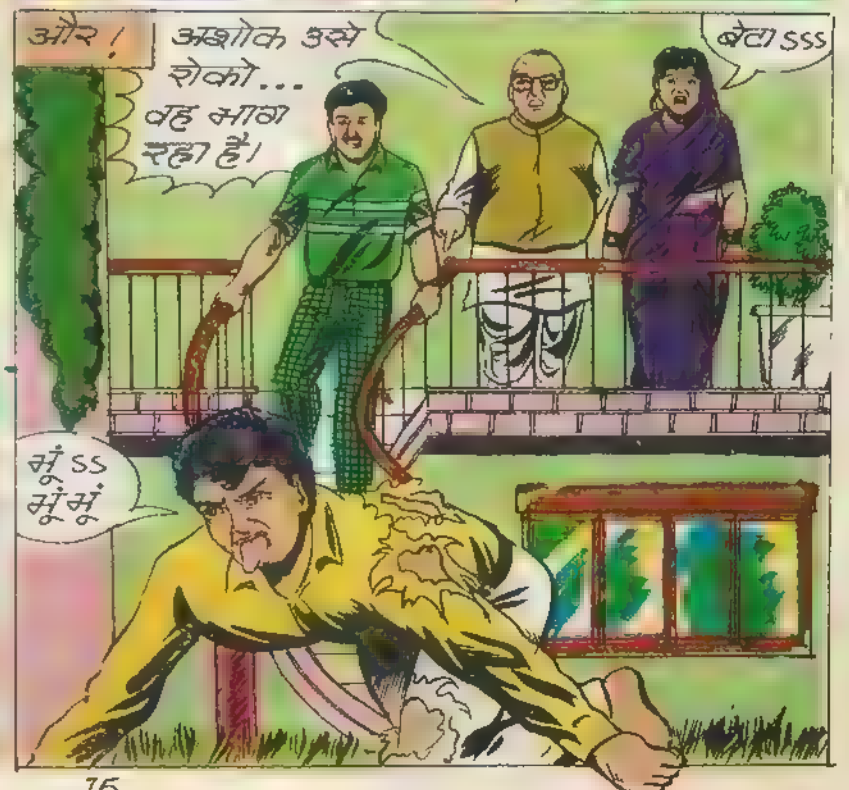
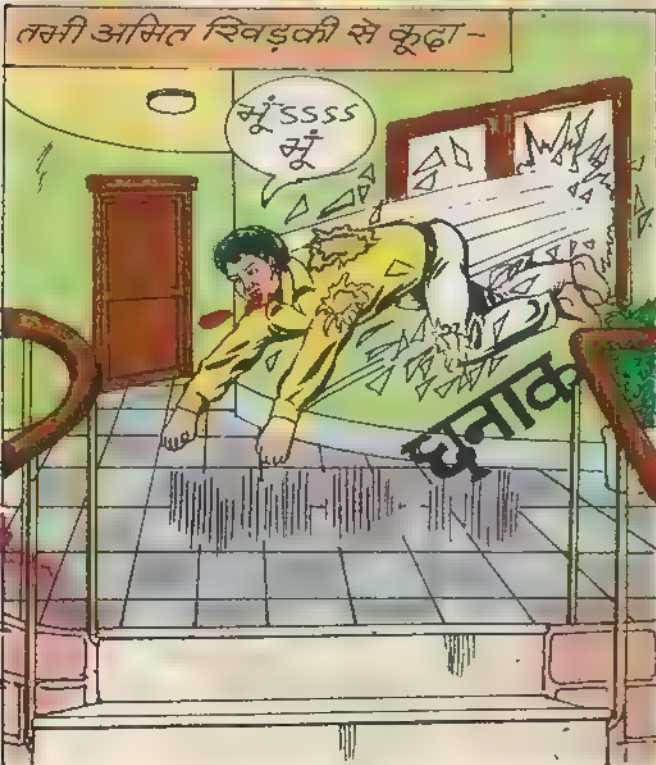
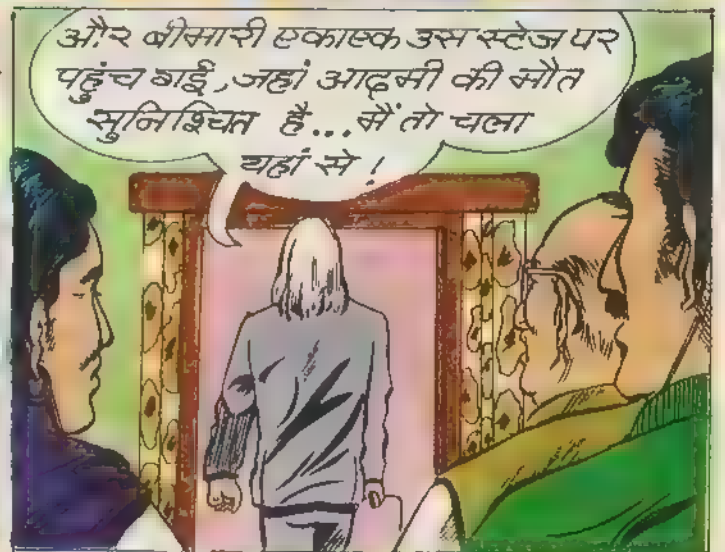
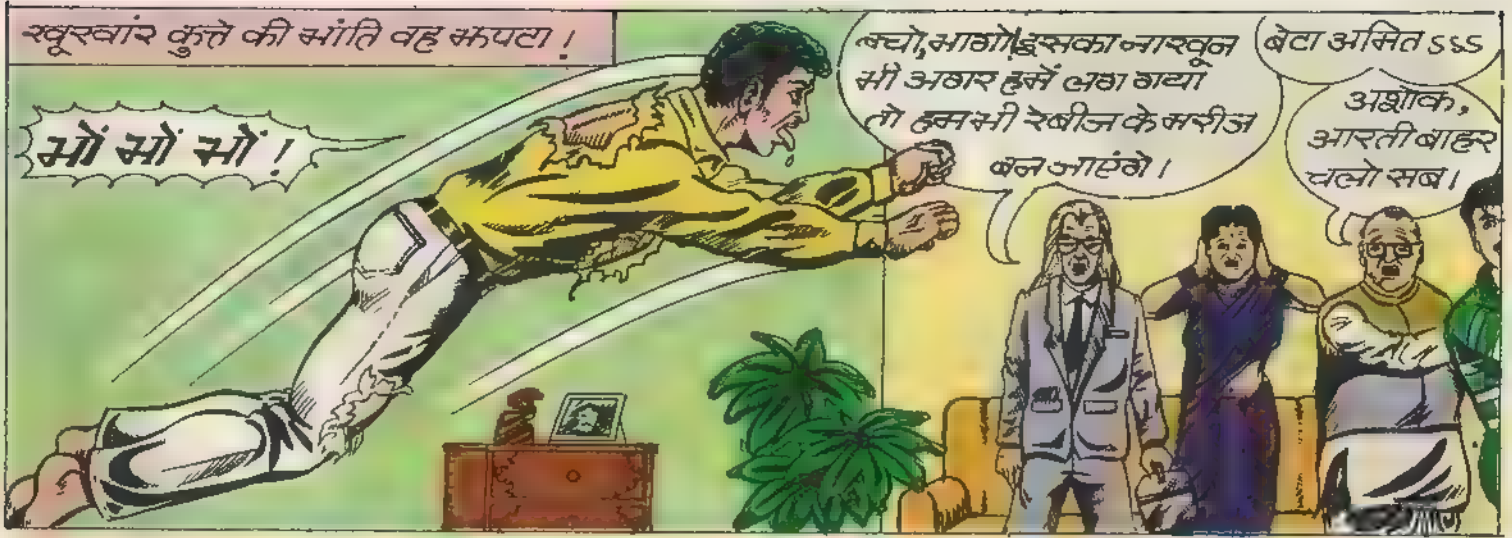




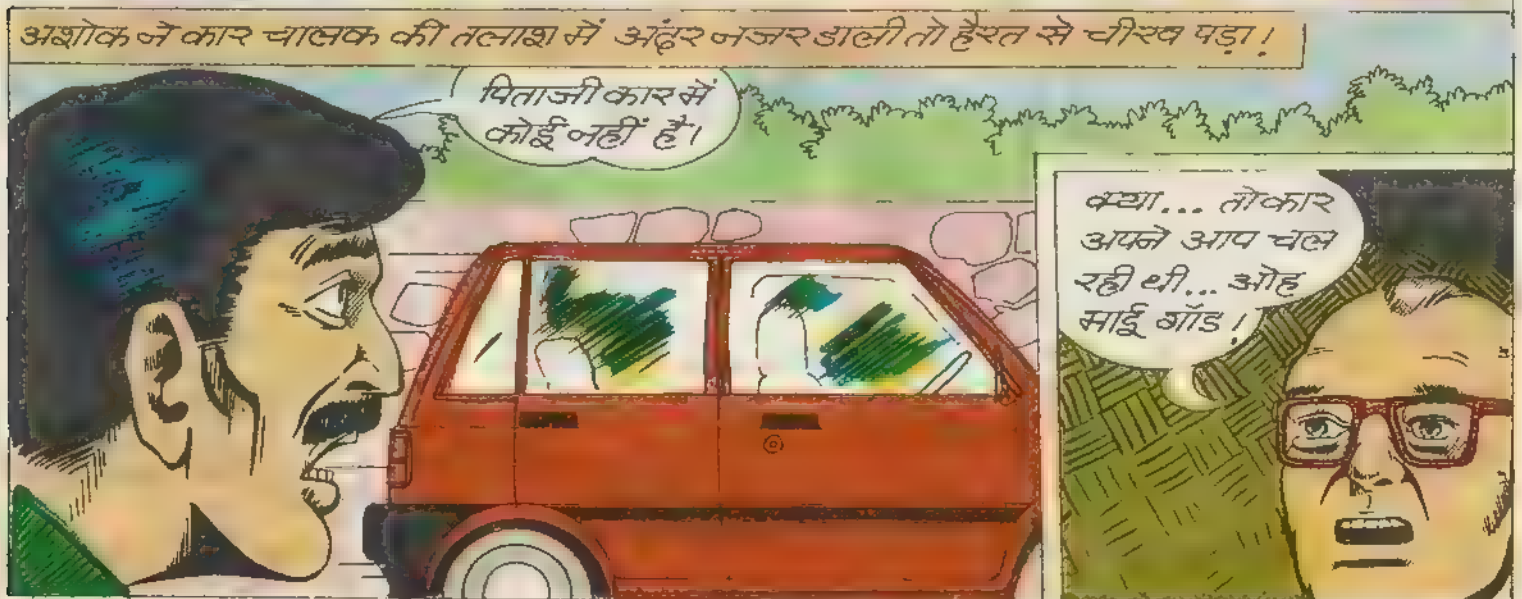
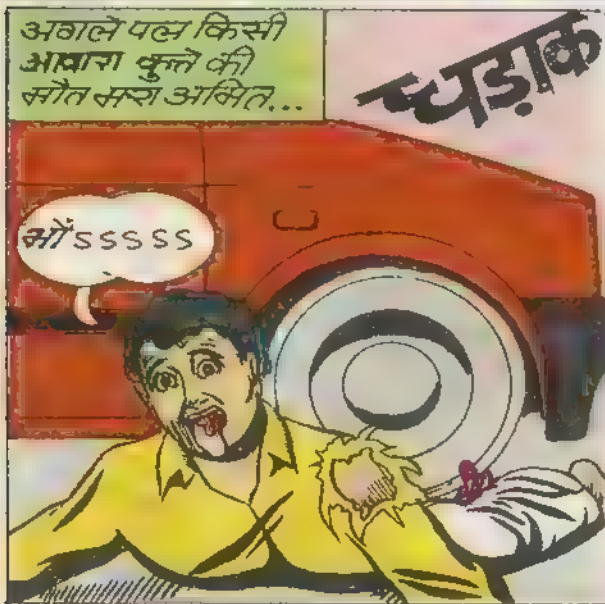
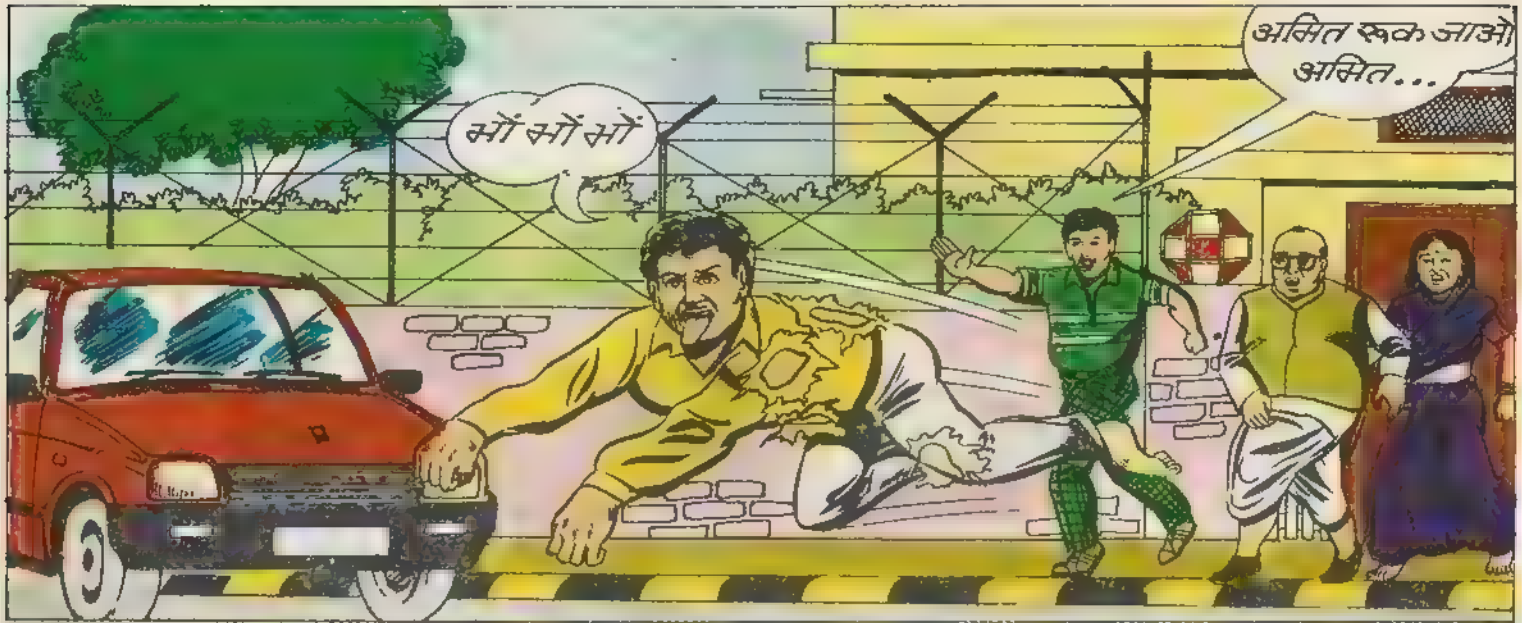
फिर अज्ञात आशंका से शंकित हो डाक्टर नैलपक कर  
अमित का चैकअप किया...



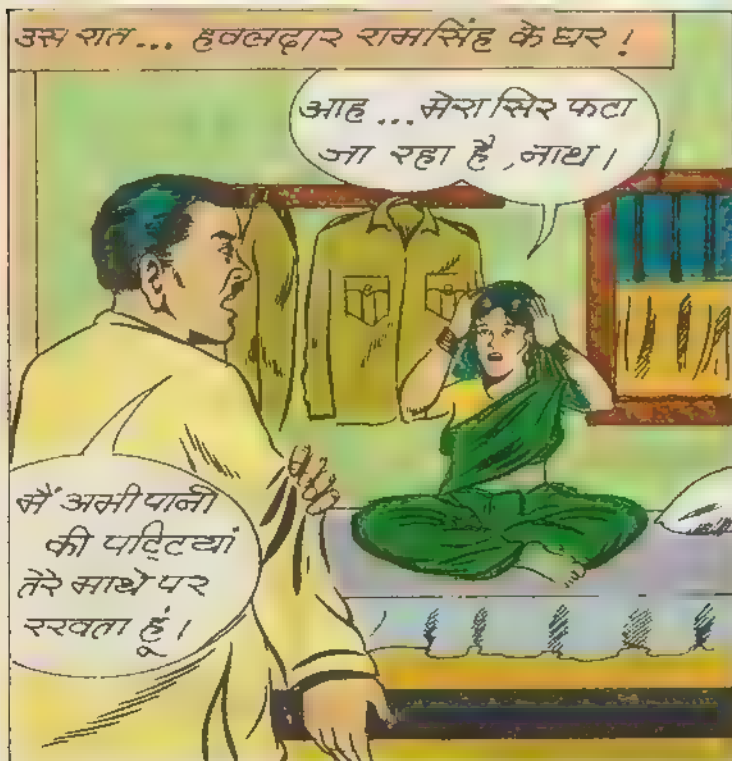
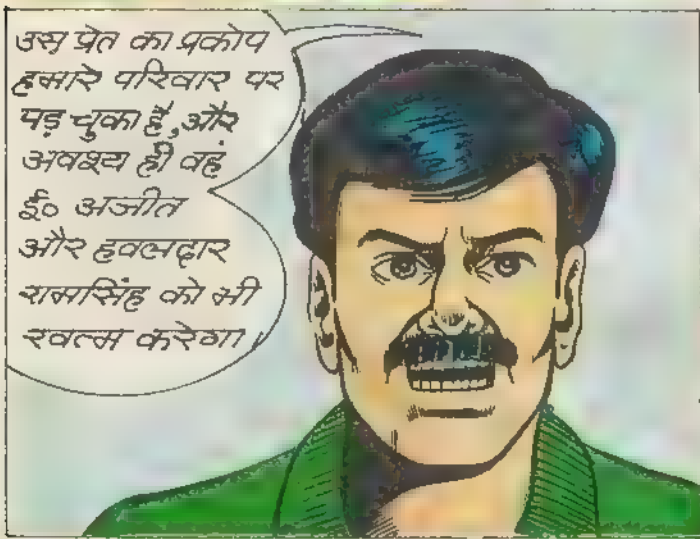






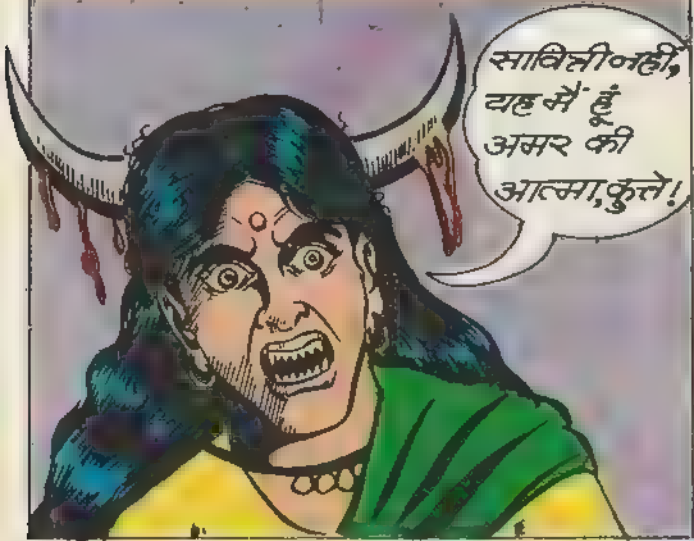




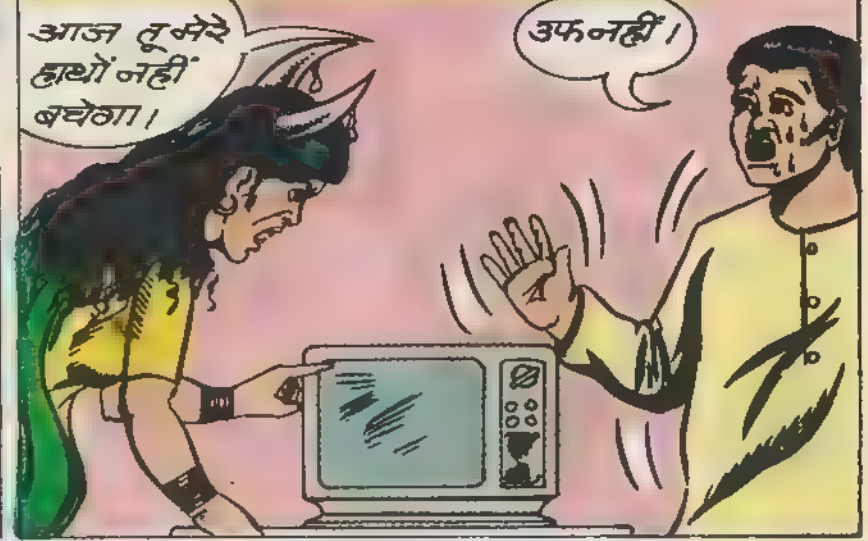




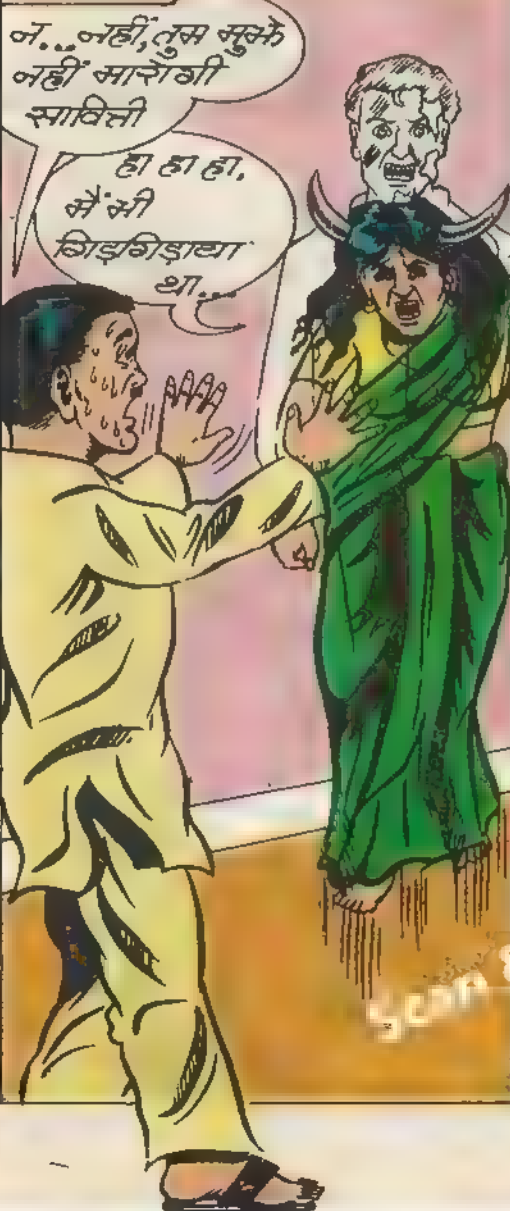
सावित्री के मुंह से मर्दाना गुर्राहट उबली-



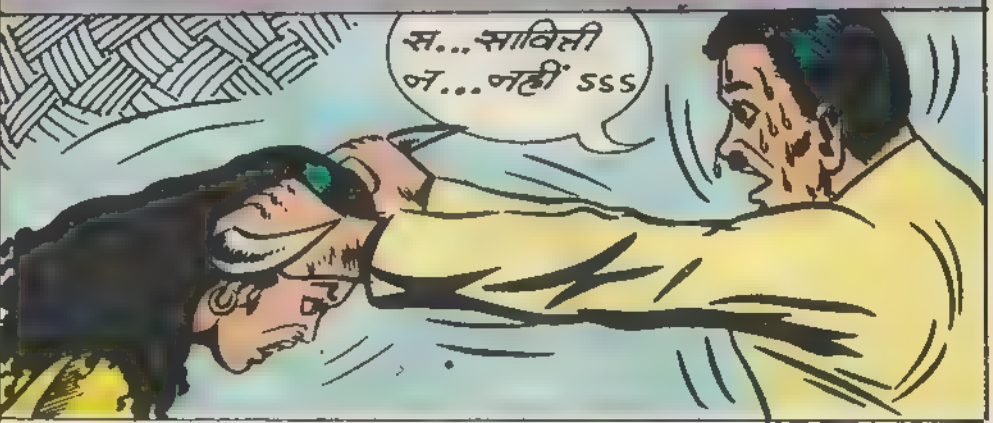
भयंकर अठ्ठाहस लगाती सावित्री कपटी-



सौत के भय से रामसिंह के बदन से यस्सीने की बाढ़ सी बहने लगी !



अब जिन्दगी और मौत में सिर्फ एक क्षण का फास लगा था ।



अगले क्षण वैसे सींग रामसिंह की धाती में समा गए...!





सुबह जब ई० को रामसिंह की मौत की खबर मिली !

ओह माई गॉड कितने  
वीमल्स तरीके से  
मरे हैं दोनों  
पति पत्नी !

साहब मुझे तो यह किसी  
इन्सान का नहीं बल्कि किसी  
मृत प्रेत का कार्य लगता है !

मृत प्रेत... नहीं  
अमर की आत्मा  
नहीं तो कही...!

और अन्दर  
तक सिहर  
उठा अजीत

मुझे तुरन्त संतोंजी  
से मिलना चाहिए !

व्या...आपके  
पुत्र अमित की  
हत्या हो गई !

तीन घंटे बाद !

हां, यह हत्या ही  
कहलाई जा रही, प्रेत द्वारा  
की गई हत्या... अमित और  
रामसिंह की हत्या उसी अमर की  
आत्मा ने की है !

पास ही खड़ा ड्राइवर धर्मपाल बिसिया उठा-

साहब फिर तो अबली  
बारी मेरी होगी क्योंकि  
मैं ही उस वक्त कार  
ड्राइव कर रहा था !

नहीं अब हमें ऐसा  
कोई उपाय सोचना  
चाहिए जिससे हमें इस  
आत्मा से धुंढकारा  
मिल सके !



मेरा एक मित्र डाक्टर  
शाकाल वैज्ञानिकी  
यहूति से प्लेन चिट पर  
आत्माएं बुलाने में  
साहिर है, अबोक तुम  
शाकाल को बुलाने  
तुरन्त चले  
जाओ।

ठीक है  
पिताजी!

अबोक को गले अभी कुछ ही क्षण बीते थे कि!

धनाक

यह आवाजें कैसी  
आ रही हैं ?

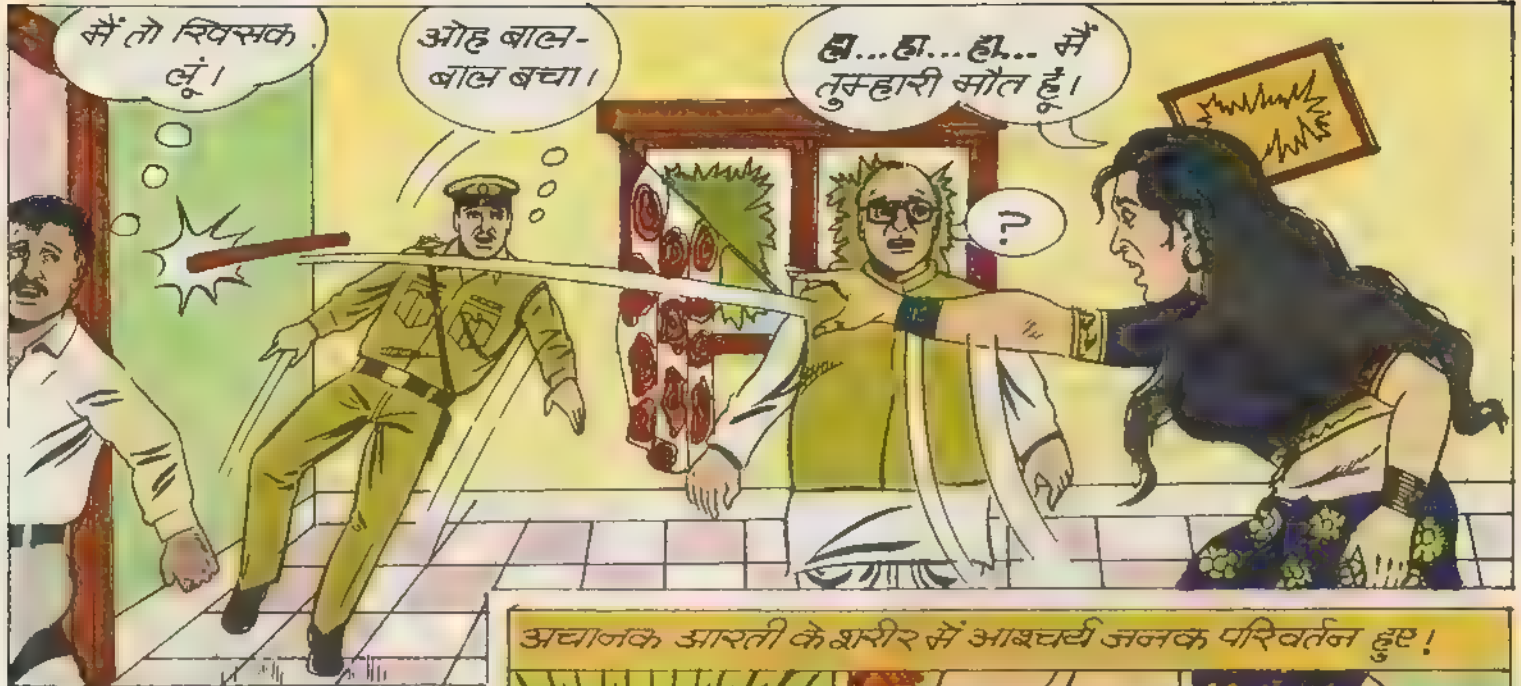
धनाक

भारती, अजीत  
तथा धर्मपाल  
चीते की भांति  
अंदर आओ।

भारती

भड़क





अचानक आरती के शरीर में आश्चर्यजनक परिवर्तन हुए!





पर भारती भाग पाता उससे पहले ही...



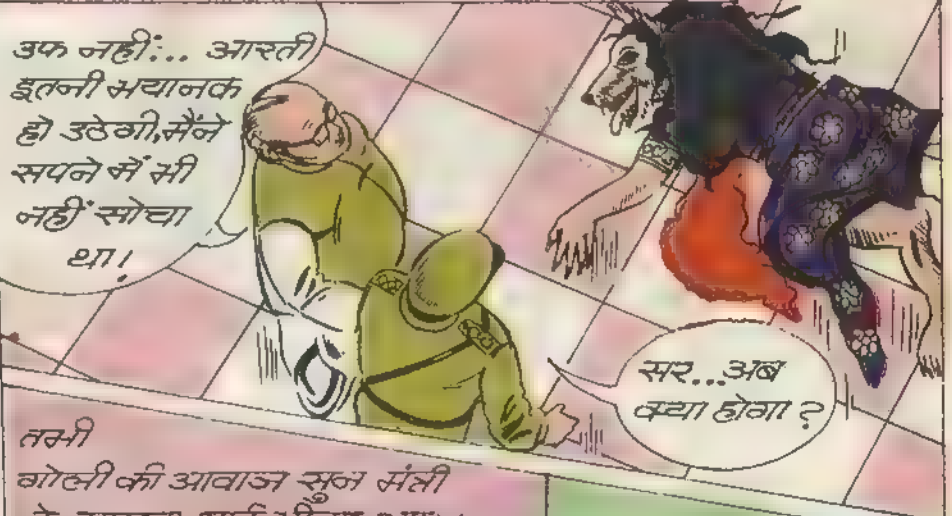
अपना अंत करीब देखकर चीत्कार ही पड़ा था वह!



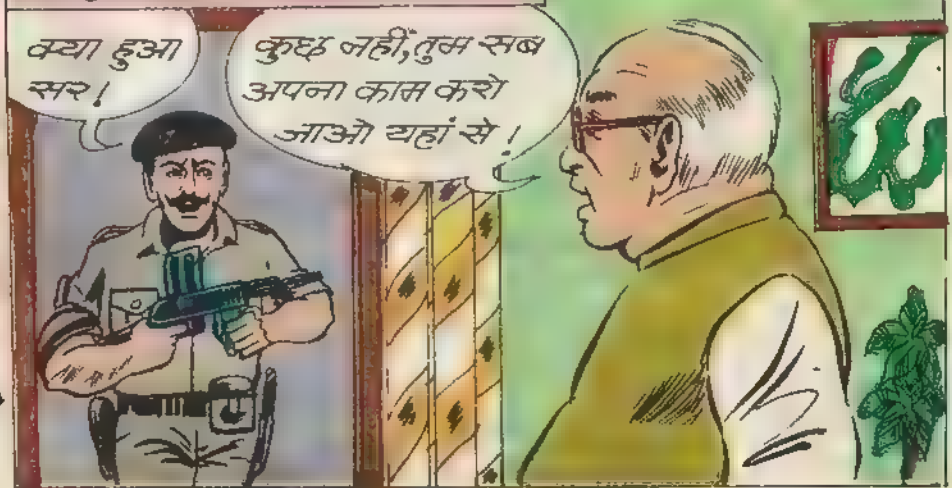
अजीत ने विद्युत गति से शिवाल्वर निकाला और -



अगले पल आरती की लाश फर्श पर पड़ी थी -

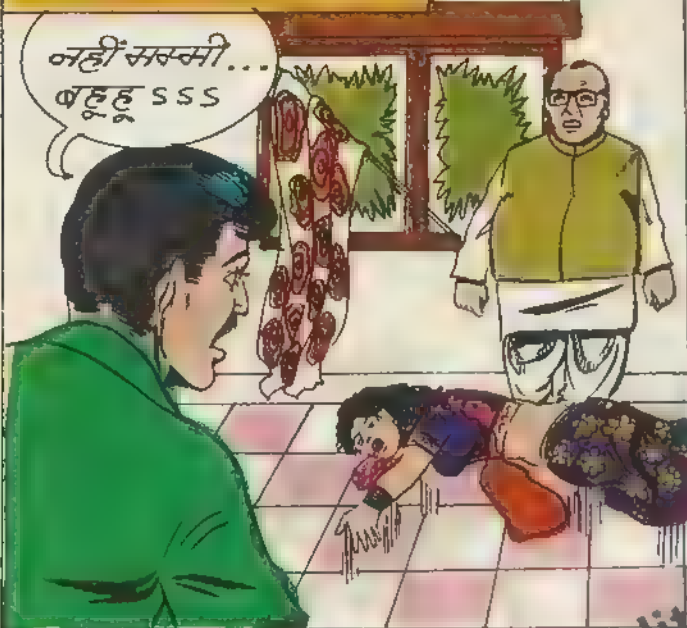


तभी बोली की आवाज सुन मंती के सुरक्षा गार्ड भीतर आए!

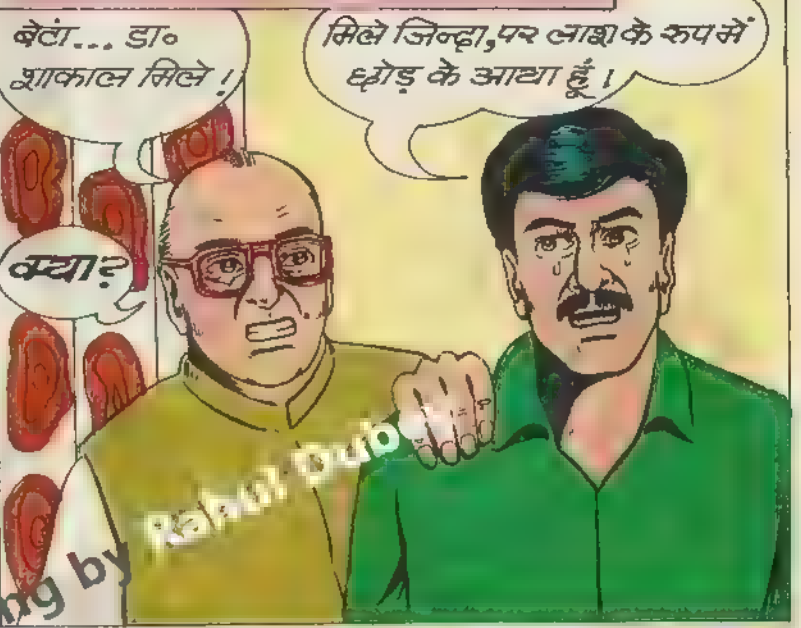




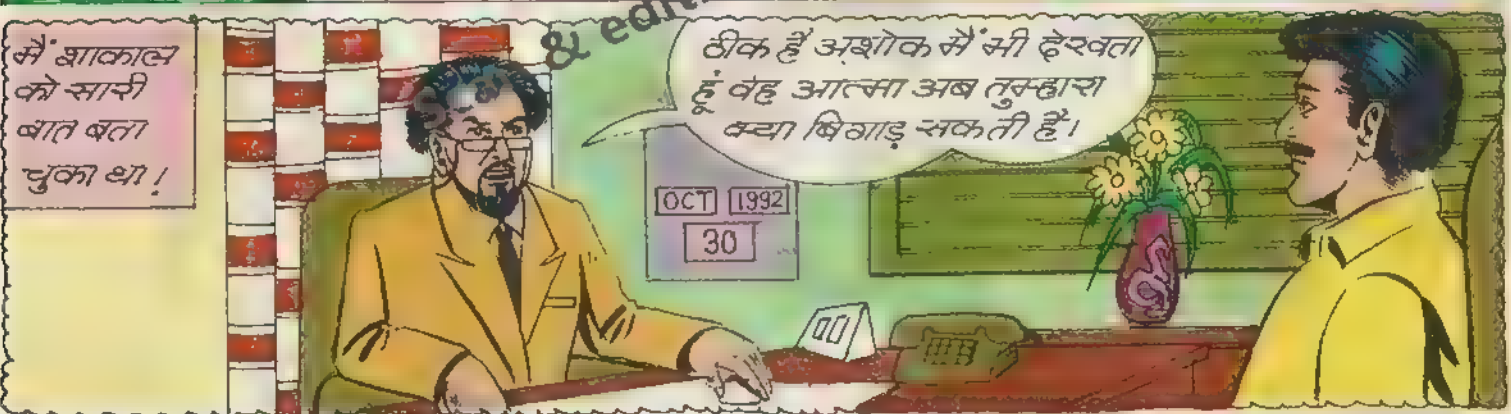
जब अशोक वापिस लौटा-



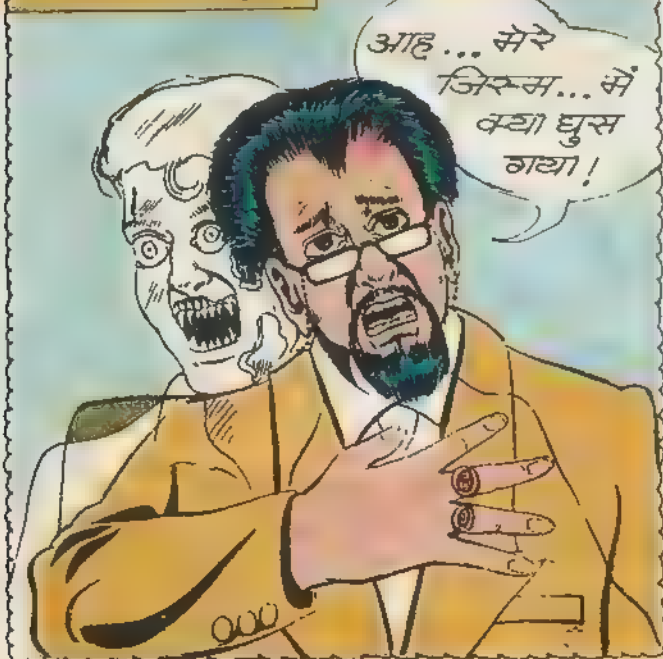
अशोक को सारी घटना बताने के बाद-



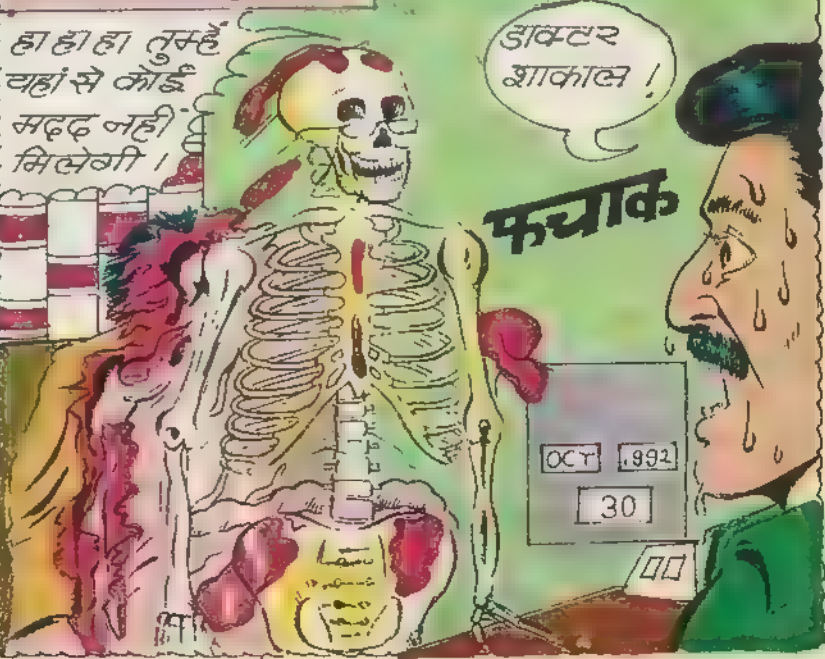
मैं शाकाल  
को सारी  
बात बता  
चुका था !



अचानक अमर की आत्मा डा० शाकाल  
से छिपत गई !

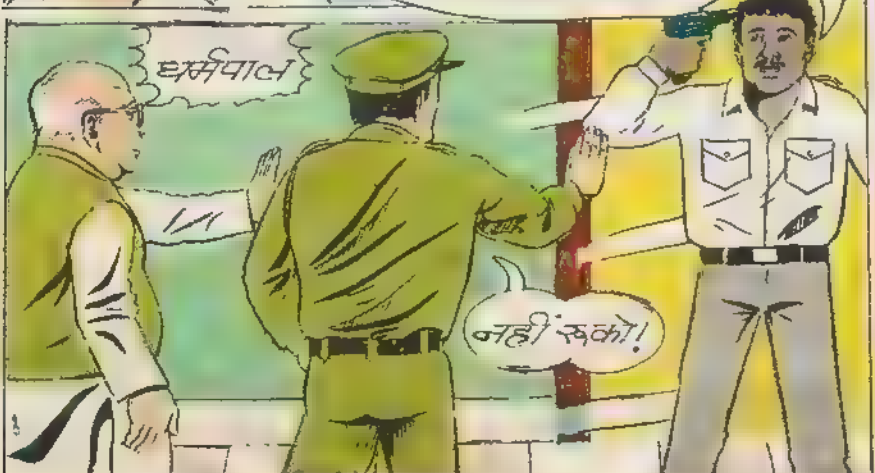
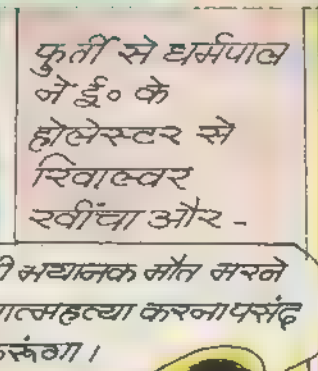
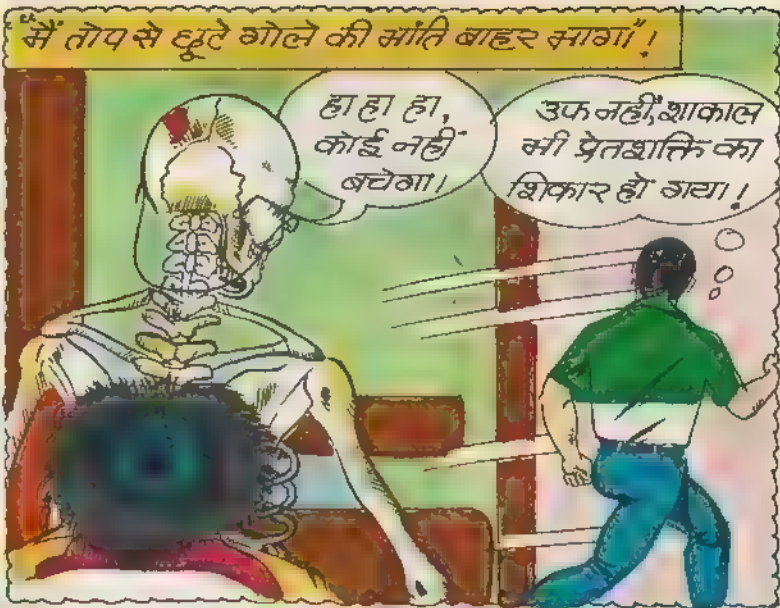
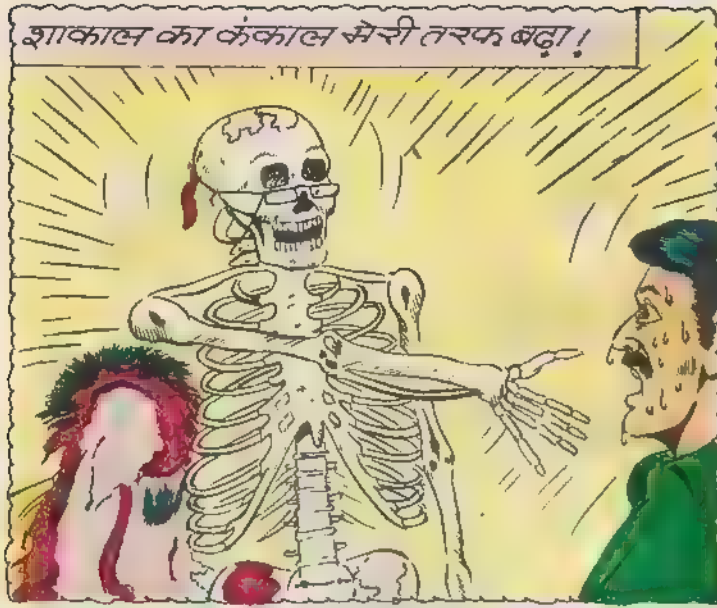


"फिर मैंने जो देखा, उसे देख अपनी आंखों पर  
विश्वास नहीं हुआ।"

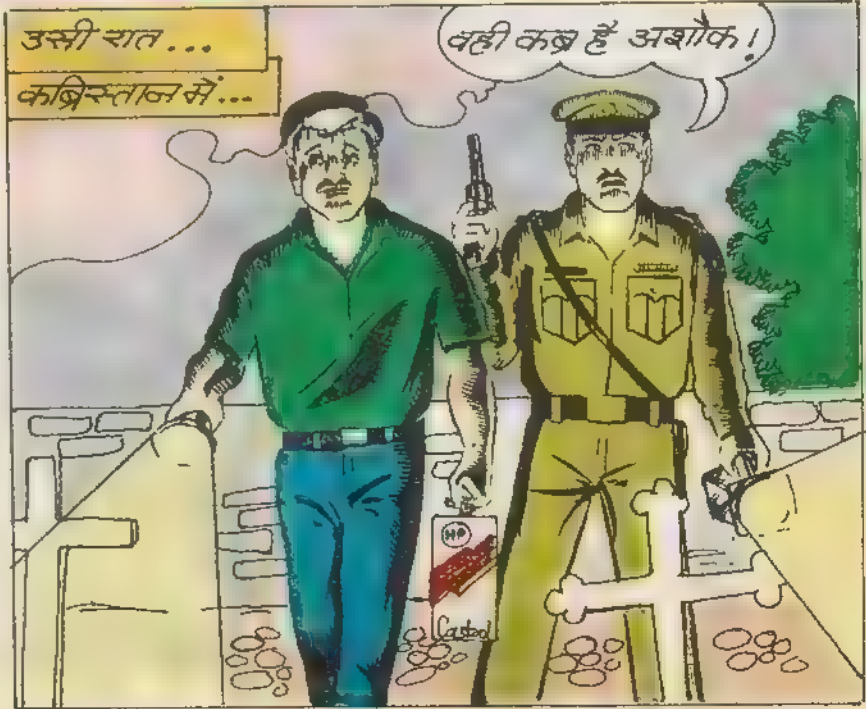




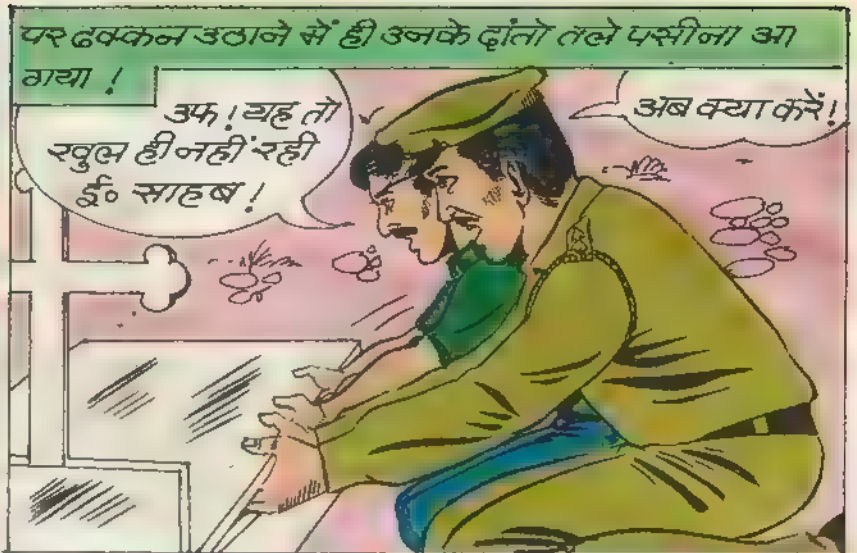
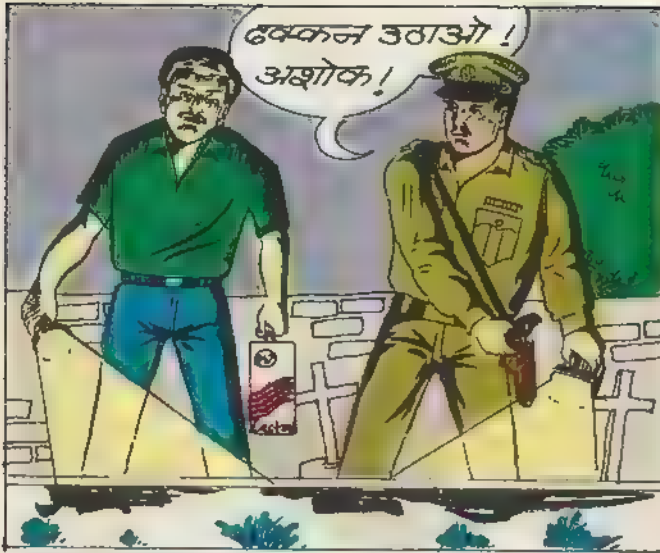
# हिंसक













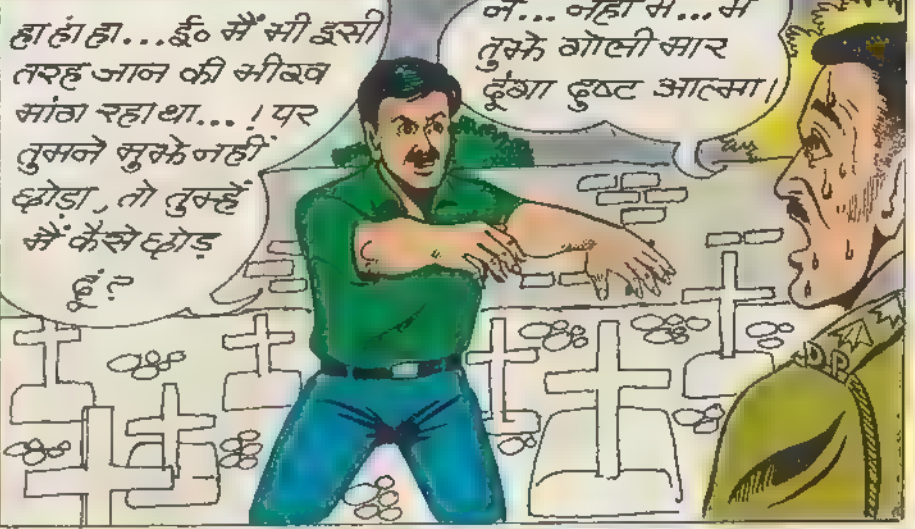
धाड़ धाड़ करता अजीत का दिल  
हुलक में आ अटका !



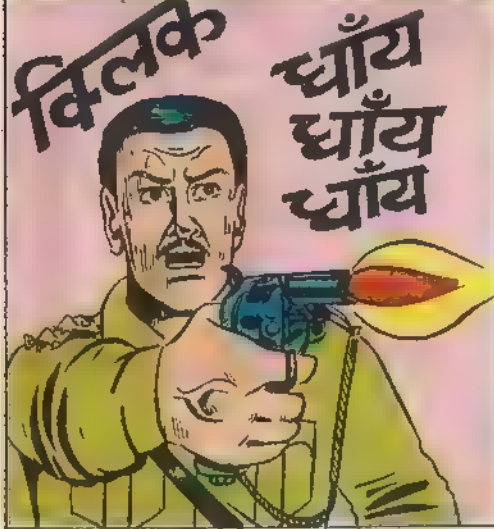
त... तुम  
असर हो...  
म... मुझे  
साफ कर दो  
असर !

पूरे कब्रिस्तान को धरि कर रख दिया उसके ठहाके में !

हा हा हा... हूं मैं भी इसी  
तरह जान की भीख  
मांग रहा था... ! पर  
तुमने मुझे नहीं  
धोड़ा, तो तुम्हें  
मैं कैसे धोड़  
हूं ?



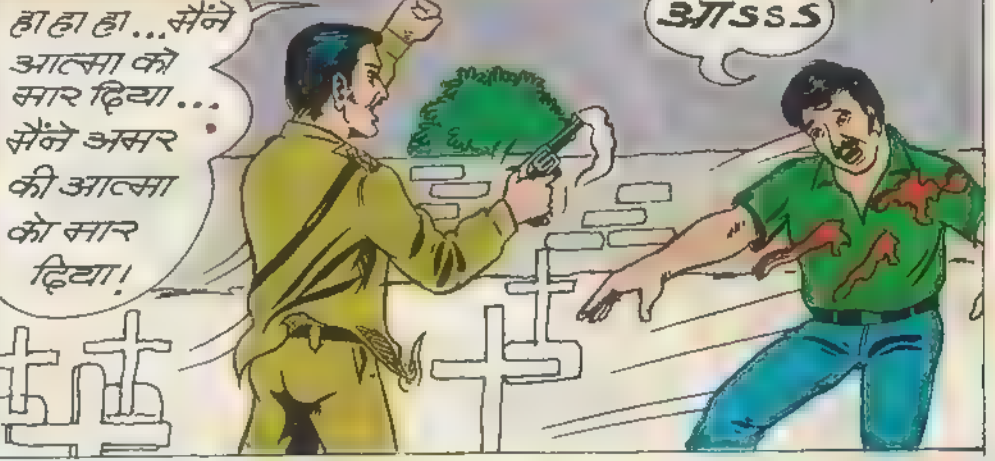
न... नहीं म... मैं  
तुम्हें गोली मार  
दूंगा दुष्ट आत्मा !



धाय  
धाय  
धाय

अशोक के जिस्म के चीथड़े उड़ गए !

हा हा हा... मैंने  
आत्मा को  
मार दिया...  
मैंने असर  
की आत्मा  
को मार  
दिया !



आsss

पर खुशी के आलस में वह यह भूल गया कि  
वह स्वयं भी पेट्रोल से सरोबार था... और  
गोली के झोहरों की लपेट में पेट्रोल पकड़ चुका था-



मैं... मैं जल  
रहा हूं... नहीं...

बेतहाशा भागने लगा वह !

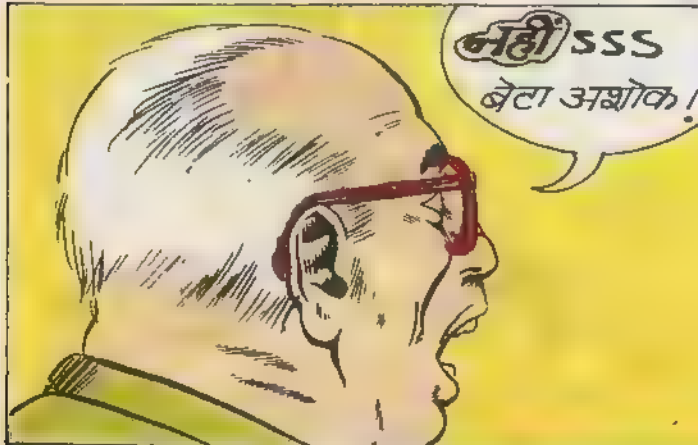


नहीं...  
मैं मरना  
नहीं चाहता  
बचाओ...  
बचाओ !

हा हा

हा हा हा





अशोक और ई० अजीत को अपने कर्मों की सजा मिल गई है,, अब तेरी बारी है... तू अपनी मौत का मातम मनाना शुरू कर दे।



फिर अठारहवा पन्द्रह दिन तक कोई अनहोनी घटना नहीं घटी, सोलहवें दिन-

क्या बात है पी०ए० साहब आप इन लोगों को अन्दर क्यों नहीं आने देते!

साहब ये आपसे मिलना चाहते हैं, मैंने कहा अभी आप परेशान हैं पर मानते ही नहीं!

इन्हें आने दो!

क्या बात है?

मंती जी हम अपने गांव में अपने स्वर्गीय सरपंच की स्मृति स्थापित करना चाहते हैं!

हम चाहते हैं कि उस स्मृति का अनावरण आपके कर कसलों द्वारा हो!

ठीक है हम आ जाएंगे, समय क्या है!

आज शाम मंती जी!

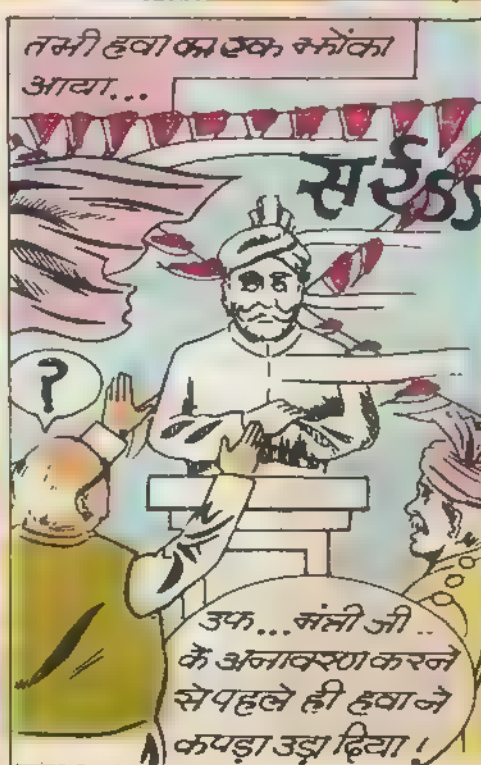
जब सब चले गए!

सर... अभी आपके पुत्र का देहांत हुआ है, ऐसी अवस्था में आप...

पी०ए० साहब, हम मंती हैं... और जनता को थोड़ा बहुत वक्त देने से कुछ घट तो नहीं जाएगा.... फिर जो होना था सो हो गया!



उसी शाम !





कसते गए...

आस ह!

और तब तक कसे रहे जब तक  
उनके हलक से आखिरी चीख  
न उबली!

37SSSSSSS

पर गांव वालों को यह सब न दिख पाया !

સંતીની ગીર ઘડે!

उठाओ, को  
उठाओ इन्हें

यह तो सर  
वाह !

क्या?

सबके होठों पर एक ही सवाल था।

आखिर संती जी  
अचानक कैसे  
मरे ।

વધ્યા હુઆ  
મંત્રી ઝી વો ।

और वह जो कई हत्याओं का जिम्मेदार था!

आज मेरी  
आत्मा को शान्ति  
मिली है। मेरी  
प्रतिशोध की ज्वाला  
आज ठंडी हो गई।





नीच इंसान ! सूर्यपुत्र के होते भारत का कोई सीक्रेट देश से बाहर नहीं जा सकता।

वाह! अपराधी कितना भी चालाक क्यों न हो, सूर्यपुत्र की पैनी नजरो से बच नहीं सकता।

ढिंशुम!

आह!

इन्सानियत का पुजारी - दुश्मनों का काल - अपराधियों की मौत ।

आज ही पढ़ें। हर जगह उपलब्ध

पवन कॉमिक्स हर माह प्रस्तुत करते हैं- सुपर हीरो सूर्यपुत्र के रोमांचक कॉमिक...



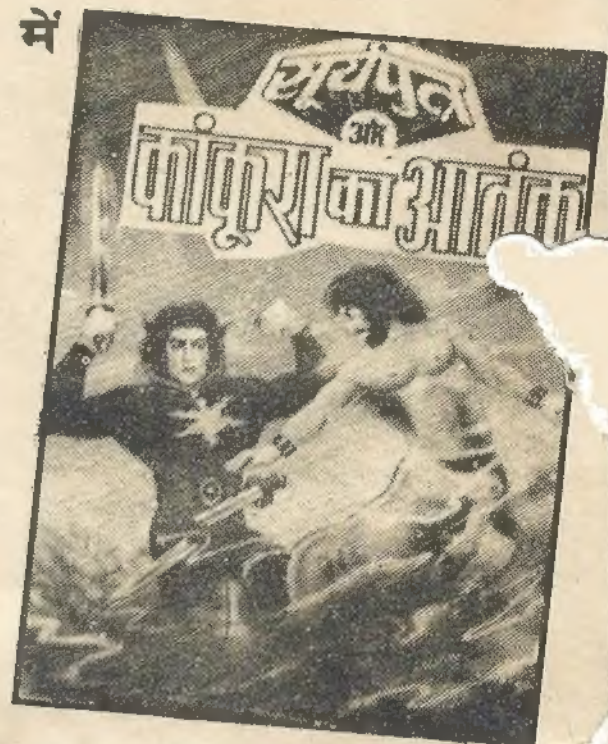
# पवन कॉमिक्स में

सुपर हीरो **सूर्यपुत्र** का  
नया हाहाकारी कॉमिक्स



## कांकुरा का आतंक

सूर्यपुत्र के अन्य प्रकाशित कॉमिक्स



- ☐ सूर्यपुत्र
- ☐ सूर्यपुत्र और बौना राक्षस
- ☐ सूर्यपुत्र और सम्राट सामरी
- ☐ सूर्यपुत्र और पंचशूला
- ☐ सूर्यपुत्र और मौत की पुतली
- ☐ सूर्यपुत्र और फिरओन की आत्मा
- ☐ सूर्यपुत्र और शरणा का कहर
- ☐ सूर्यपुत्र और डॉन मस्ट्रोना
- ☐ सूर्यपुत्र और खजूरा का जहर



सम्पादक : देवकी नन्दन शर्मा

मुद्रक : जापान आर्ट प्रेस, नारायणा, दिल्ली-28

अपने  
निकटतम  
बुक स्टाल  
से खरीदें

समस्त कॉपी राईट प्रकाशकाधीन

प्रकाशक :

एनन पॉकेट बुक्स

दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006



**पवन कॉमिक्स**

प्रस्तुत करते हैं

**सूर्यपुत्र**

**सूर्यपुत्र**  
और

**कांकूर का आतंक**

का नया रोमांचक कॉमिक्स

64 रंगीन  
पृष्ठों का  
डायजेस्ट

Scan & editing by Rahul Dubey

प्रकाशक :

पवन पॉकेट बुक्स

4537-दाईवाड़ा, नई सड़क, दिल्ली-110006